मैथिली

साहित्य

रघुनन्दनदास

सुरेन्द्रझा सुमन

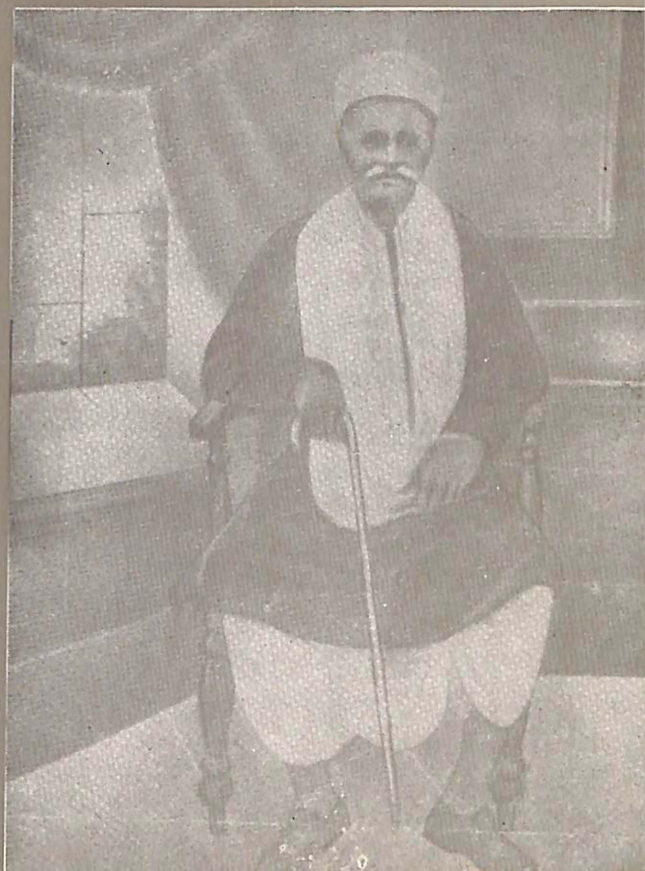

MT
817.230 92
D 26 J
भारतीय
साहित्यक

MT
817.230
D 26 J 92

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

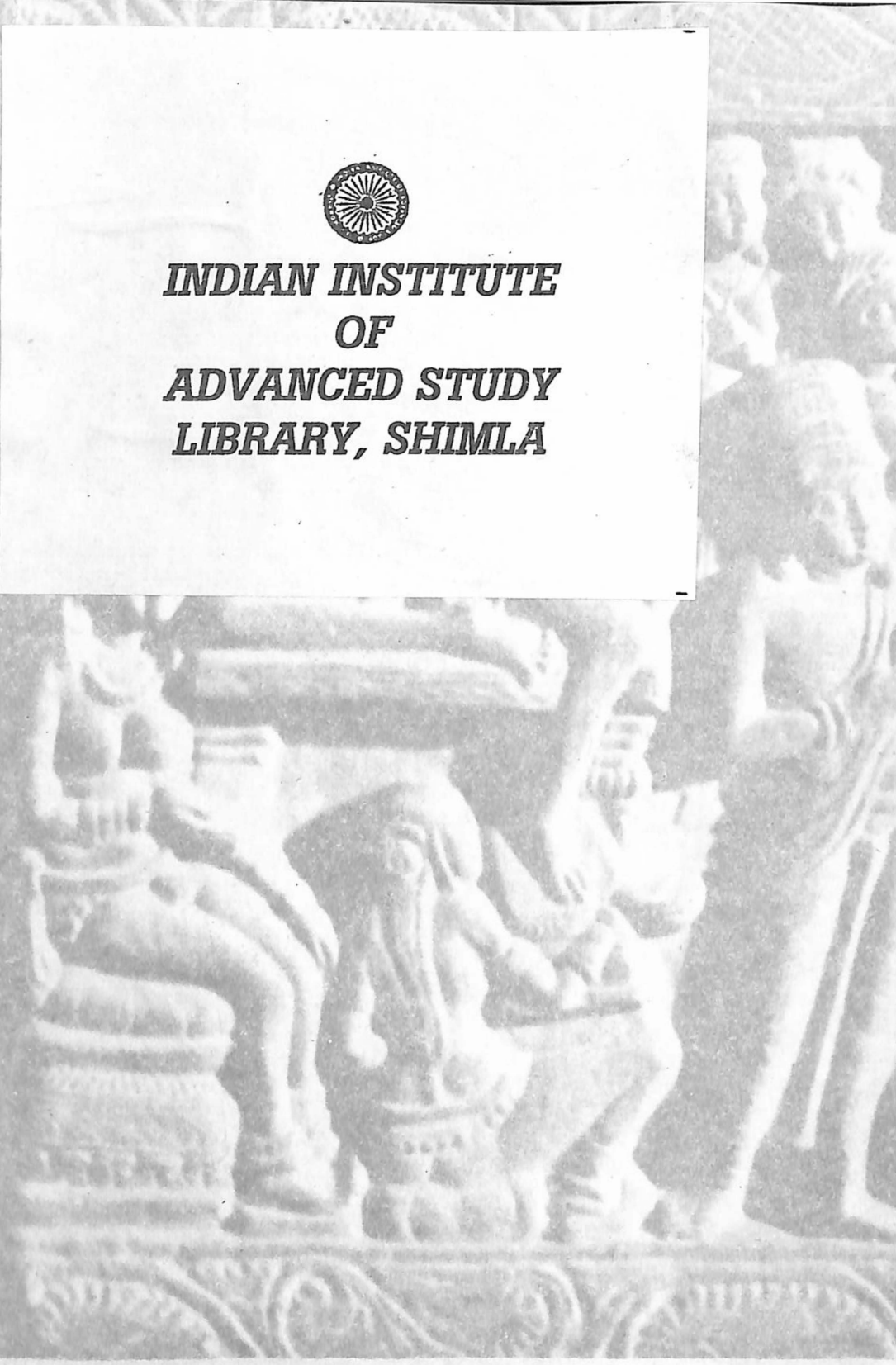

रघुनन्दनदास

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्य-वक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

रघुनन्दनदास

लेखक
सुरेन्द्रझा 'सुमन'

साहित्य अकादेमी

Raghunandan Das : A monograph in Maithili by Surendra Jha 'Suman' on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1996), Rs. 15.

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९६

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 D 26 J
00117175

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय
१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड,
कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सलाई, तेनामपेट, मद्रास ६०० ०१८
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

मूल्य : पन्द्रह टाका

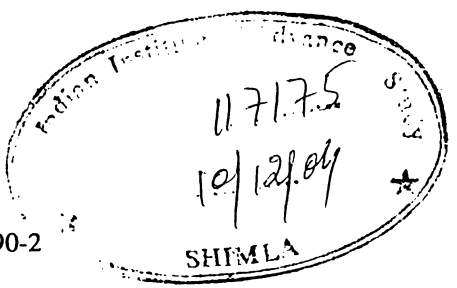

ISBN 81-260-0090-2

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

MT
817.230 92
D 26 J

अनुक्रम

प्रासंगिकी	७
समय-परिवेश	९
कुल-परिवार	१२
जीवन-वृत्त	१६
रचनावली	२१
नाटक	२३
महाकाव्य	३१
खण्डकाव्य	५७
गीत-रचना	६०
गद्य-लेखन	६३
विभिन्न भाषाक रचना	६५
उपसंहरण	६९
परिशिष्ट :	
वंश-प्रसंग	७०

प्रासंगिकी

साहित्य अकादेमीक मैथिली-परामर्श समिति मैथिलीक प्रथम नैबन्धिक महाकाव्य–रचयिताक रूपमे प्रथित मुन्शी रघुनन्दनदासजीक परिचयात्मक विनिबन्ध लिखवाक हेतु जखन हमर नाम अनुशंसित कयलक, तखन हम कने सहमि गेलहुँ। कारण, मुन्शीजीक प्रसंग जाहि परिचय–विशेषज्ञताक अभिज्ञा हमरासँ कयल जाइत छल से तत्त्वतः हमरा नहि छल। मुन्शीजीसँ हमरा वैयक्तिक परिचय केवल मैथिली-साहित्य-परिषद् द्वारा हुनका 'साहित्य रत्नाकर' उपाधि प्रदान करवाक प्रसंग समारोहक अवसरपर संस्थाक एक सदस्य रहबाक कारणेँ एवं 'मिथिलामिहिर'मे हुनक महाकाव्य 'सुभद्राहरण'क क्रमिक प्रकाशनमे योगदान देबाक हेतुएँ छल। एकर अतिरिक्त हुनकासँ हमरा व्यक्तिगत कोनो सम्पर्क नहि छल। हँ, हुनक ज्येष्ठ बालक बाबू नरेन्द्रनाथदास विद्यालंकारसँ अवश्य घनिष्ठ बन्धुता रहल, 'विद्यापतिकाव्यालोक'क प्रकाशनसँ लय परिषदक कार्यविधिमे सहयोगी रहबाक कारणेँ। संगहि मुन्शीजीक परम भक्त एवं प्रभावित शिष्य बाबू भोलालालदासजीक स्निग्ध बन्धुतो मुन्शीजीक प्रति हमर आस्था–निष्ठा बढ़यबामे प्रेरक रहल। यदा-कदा सम्पादकीय टिप्पणी द्वारा मुन्शीजी एवं हुनक रचनाक प्रति अभिव्यक्त विचारसँ हमरा घनिष्ठ परिचय एवं विषयज्ञ बुझबाक कारण बनि गेल छल। यैह कारणो भेल जे 'सुभद्राहरण'क प्रकाशन जखन 'हरिनन्दन स्मारक ट्रस्ट, राघोपुर' द्वारा आयोजित भेल तखन तकरो भार हमरहिपर देल गेल। पाछाँ प्रकाश्यमान 'वीर बालक'हुक मुद्रण-प्रसंग एकर देख-रेखक भार नरेन्द्रबाबू द्वारा हमरहि धरा देल गेल। बुझि पड़ैछ यैह सभ कारण छल जे प्रस्तुत विनिबन्ध लिखबाक अनुरोधो हमरासँ कयल गेल हो।

अस्तु, जखन हम एहि दिस प्रवृत्त होअय चाहल तखन विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध रहबाक कारणेँ पहिने मुन्शीजी–सदृश महान् कविक प्रसंग शोधछात्र कोनो शोध-कार्यमे प्रवृत्त भेल छथि वा नहि तकर सन्धान कयलापर पता चलल जे प्रो. धर्मानन्दसिंहजी हिनकापर पी-एच. डी. क लेल शोध-निबन्ध लिखबाक हेतु निबन्धित छलाह, परंच बीचहिमे ओ दिवंगत भऽ गेलाह। पुनः दोसरो व्यक्ति हुनक कृतिपर शोध-कार्य लेल प्रवृत्त भेलाह तँ सेहो बाधिते रहलाह। तदुत्तर तँ एहि प्रसंग आन केओ कार्य करबालेल प्रवृत्त होइत

नहि देखल गेलाह । एम्हर नरेन्द्रबाबूक दिवंगत भेलाक बाद तँ हुनक रचना आदिक स्रोत सेहो बाधिते रहल ।

ओही बीच कर्णगोष्ठी, कलकत्ता द्वारा बाबूभोलालदासजीक प्रसंग चि. श्री शम्भुनाथमिश्रक 'मैथिली दधीचि बाबू भोलालालदास' ग्रन्थक लोकार्पण प्रसंग ओतय जयबाक हेतु एहू लेल विशेष प्रवृत्त भेलहुँ जे एहि प्रसंगसँ मुन्शीजीक साहित्य ओतय उपलब्ध भऽ सकय । बहुत-किछु से भेबो कयल । मुन्शीजी अपन वंशपरिचयमे बीजीपुरुषरूपमे श्रीधरदासक हुनक निर्मित श्रीधरमन्दिरक शिलालेखमे ल. सं. (लक्ष्मणसेन संवत्)क उल्लेखपूर्वक नान्यवंशीय सचिव रूपमे उल्लेख कयने छथि । लक्ष्मणसेनक सामन्त रूपमे वटुकदासक आत्मज श्रीधरदासक रचित सुभाषित 'कर्णामृत' देखल । प्रशस्तिपद्यसँ मिथिलाक इतिहासमे सेनवंशोत्तर नान्यवंशक राज्यक क्रममे श्रीधरदासक अमात्य रूपेँ उल्लेखसँ एहि मान्यताक आधारो भेटल जे सम्भव सेनवंश ओ नान्यवंशमे सन्धिसूत्रक रूपमे श्रीधरदासक व्यक्तित्व विशेष रूपेँ निखरल हो । 'विद्याकर साहस्री'क बाद हुनक 'कर्णामृते'मे अधिकांश मैथिल सूक्तिकारक पद उपलब्ध होइछ । मिथिलाक अनेक कवि गोवर्धनाचार्य, उमापतिधर प्रभृति लक्ष्मणसेनक सभासद रूपमे उल्लिखित छथिहे । अतएव सेनवंश–नान्यवंशमे मैत्रीक वातावरण स्थापित करबामे एहि सभ व्यक्तित्वक प्रभाव रहल हो, से सम्भावित अछि । अतएव लक्ष्मण–संवतक मिथिलामे विशेष प्रवर्तन देखल जाइछ ।

पुनः मुन्शीजीक साहित्यक प्रसंग चर्चा भेलापर कर्णगोष्ठीक सचिव राजनन्दनलालदासजी हुनक कृति–प्रवृत्तिपर प्रकाशित किछु मुद्रित सामग्री एवं किछु अप्राप्य रचना सेहो उपलब्ध कराओल जाहि लेल हम कर्णगोष्ठी, कलकत्ताक विशेष कृतज्ञ छी । हुनक प्रकाशित महाकाव्य एवं 'वीर बालक' खण्डकाव्यक प्रकाश्यमान प्रति उपलब्ध करयबामे हरिनन्दनसिंह स्मारक ट्रस्टक अध्यक्ष बाबू कृष्णनन्दन सिंहजीक सेहो आभारी छी । एहि सब सामग्रीक संकलनपूर्वक लेखन-कार्यमे प्रवृत्त तँ भेलहुँ परंच बीचहिमे रोगशय्याश्रित भेने लेखन-कार्य बाधित रहल । अथापि येनकेन प्रकारेण विलम्बहिसँ सही, मैथिलीक एक विशिष्ट साहित्यस्रष्टाक पुण्यस्मृतिमे पुष्पांजलि अर्पित करबाक हेतु अपनाकेँ कृतार्थ बुझैत छी ।

विनिबन्धक लेखनमे परामर्श–सुझाव देबाक हेतु आयुष्मान् श्रीअमरजी, श्रीभीमनाथझाजी, श्रीअशोककुमारठाकुरजी एवं श्री समरेन्द्रनारायणचौधरीजीक प्रति एवं प्रकाशन–प्रक्रियामे तत्परता हेतु श्रीसुरेश्वरझाजीक प्रति हार्दिक शुभाशंसा व्यक्त करब कर्त्तव्य बुझैत छी जाहिसँ रोगशय्याश्रित रहनहु जेना-तेना कार्य सम्पादित कऽ सकलहुँ ।

मैथिली-मन्दिर
राजकुमारगंज, दरभंगा
भैरवाष्टमी, १९९५

–सुरेन्द्रझा 'सुमन'

समय-परिवेश

मुन्शी रघुनन्दनदासक जीवन ओ कृतिपर देशकालक प्रभाव कोन रूपेँ पड़ल अछि ताहि हेतु हुनक जीवनावधि १८६० सँ १९४५ ई. क कालावधि एवं मिथिलाक प्रमुख पंचक्रोशी स्थित ग्रामांचलपर दृष्टिपात करब वांछित होयत ।

१८६० ई.क समय भारतवर्षहिक राजनीतिक जीवनमे ऐतिहासिक परिवर्तनक समय मानल जाइछ । विदेशी व्यापारिक ईस्ट इंडिया कम्पनीक रक्तशोषी व्यापारिक शासनसँ तंग आबि १८६०क प्रथम राष्ट्रिय जागरण पर्वसँ तीन वर्ष पूर्वहि १८५७ मे तथाकथित सिपाहीविद्रोह उद्घाटित भऽ चुकल छल । विदेशी वणिक्-शोषकक जालसँ उत्पीड़ित देशक जनतामे त्राहि मचल छल । आर्थिक शोषणक संग जखन सामाजिक-सांस्कृतिक जीवनपर सेहो पाश्चात्य आघात होअय लागल तखन सर्वप्रथम सिपाही वर्गमे विद्रोह उठल, संगहि राज-रजबाड़ा एवं समाजक बुद्धिजीवी वर्गमे सेहो विद्रोहाग्नि धधकि उठल । ओही समय प्रसिद्ध विद्रोही नानाफड़नबीस विदेशी शासनक विरुद्ध गुप्तवास करैत मिथिला होइत नेपालक यात्रा कयने छलाह । दरभंगाक तत्कालीन महाराज महेश्वर सिंहसँ हुनका भेँट-घाँट भेल छल ओ सहयोगो भेटल छल । तत्कालीन राजनीतिक जागरणक प्रभाव मिथिलोपर पड़ल छल । बादमे कोठीवाल अंग्रेज सभक दखलन्दाजीसँ गृहस्थवर्ग त्रस्त छले । नीलक खेती विस्तारसँ चम्पारणसँ पूर्णिया धरिक मिथिलांचल, विशेषतः कोशी–गण्डकीक मध्यवर्ती उर्वर भूमिपर विद्रोहदमनकारी अंग्रेजक क्षेत्र–विस्तारसँ एहि ठामक जन-जीवन विशेष त्रस्त छल । अनेक ठाम कोठीवाल ओ स्थानीय जमीन्दारक बीच दंगा-फसाद मचैत रहल । एहि बीच अकालहुक चपेट एहि भागक जन-मानसकेँ उद्वेलित कऽ रहल छल । एही अवधिमे १८६० मे ब्रिटिश-शासनक प्रसंग घोषणा भेल । स्थितिमे किछु परिवर्तन तँ आयल, परंच आब देश पुनः कम्पनी–शासनसँ बदलिकऽ ब्रिटिश साम्राज्यक साक्षात् शासनमे बन्हि गेल । संगहि देशी राजा-महाराजक सहयोग प्राप्त करबामे शासन-पक्ष लागि गेल ।

ओही समय महाराज महेश्वर सिंहक मृत्यु भऽ गेलनि आ दरभंगा राज कोर्ट ऑफ

वार्ड्सक अधीन लागि गेल एवं मिथिला-राजपरिवारसँ जे सहयोग साधारण समाजकेँ भेटैत छलैक (शिक्षा-कला-साहित्य) ओहिमे कमी आबय लागल । गाम-गाममे जे चौपाड़ि चलैत छल, संस्कृत–शिक्षाक प्रसार होइत छल ओहिमे कमी आयल । तथा क्रमहि देशी भाषा हिन्दी–अंग्रेजीक शिक्षा प्रवर्तित होअय लागल । ताहिसँ शिक्षणप्रणालीमे क्रमहि परिवर्तन भेल ।

मिथिलाक जनभाषा मैथिलीक स्थानमे पत्र-पत्रिका हिन्दीमे प्रचारित भेने क्रमशः हिन्दीक तथा कवित्त आदिमे ब्रजभाषाक प्रचार होइत रहल । मुगलकालीन फारसी-उर्दूक परम्परा सेहो विलुप्त नहि भेल छल । नवजागरणक फलस्वरूप मातृभाषाक प्रति, स्वभूमिसंस्कारक प्रति गौरव लोकमे जागृत छले । एहि सभ परिवेशक सम्मिलित प्रभाव मुन्शीजीक जीवनमे प्रत्यक्ष देखल जायत । संस्कृतक प्राचीन परम्पराक प्रभावक संग उर्दू–फारसीक शिक्षा ओ प्राप्त कयलनि । ब्रजभाषामे रचना कयलनि । तत्कालीन हिन्दीक पत्र–पत्रिकामे प्रचलित समस्यापूर्ति आदिक रचनामे सेहो ओ योग दैत रहलाह । संस्कृत-परम्पराक महाकाव्यक अनुगमे ओ सर्गबन्ध महाकाव्यक रचनाकारक रूपमे प्रसिद्ध भेलाह । भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक 'भारत-दुर्दशा' नाटकक ढंगपर 'मिथिला नाटक'क रचना कयलनि । एहिमे देश-दुर्दशाक चित्रणक संग प्रेरणात्मक प्राचीन विद्यागारा मिथिलाक गौरव-परम्पराक सेहो सजीव चित्रण करबामे सफल रहलाह ।

हुनक पूर्वपुरखा लोकनि जहिना राजवंशसँ सम्बद्ध रहलाह आ सेनवंशसँ लय कार्णाटवंशक तत्कालीन राज-कुलक आश्रयमे ख्याति अर्जित कयलनि तहिना ओ समकालीन खण्डवलाकुल राजपरिवारक आश्रयमे जीवन-साधनामे लागल रहलाह । जाहि ग्रामांचलमे जाति-कुल ओ संस्कार–व्यवहारक एवं अपन परम्पराक विचारक प्रचार छल ताहि सभक प्रतिबिम्बन अपन रचनामे करैत अयलाह ।

ओ मिथिलाक प्रसिद्ध पंचक्रोशी सोतिपुराक अन्तर्गत मनीगाछीक निकट सखवार गामक निवासी छलाह, जे प्रसिद्ध पण्डित ओ आचारवान् नैष्ठिक कर्मकाण्डी लोकनिक केन्द्र छल । संस्कृतक संग भाषा–साहित्यहुक विकासमे ओहि केन्द्रभूमिक योगदान प्रशस्त रहल । मिथिला–राजकुलक आश्रय–प्रश्रय ओहि क्षेत्रमे प्रचुर मात्रामे अभिव्यक्त छल । मुन्शीजीक कृति–प्रकृतिमे तकर प्रभाव प्रमुख रूपमे दृष्टिगोचर होइछ । आस्तिकता, दार्शनिकता, परम्पराक प्रति निष्ठा, कुल-जाति ओ सामाजिक पंजीप्रथाक प्रतिष्ठा हिनक व्यक्तित्व ओ कृतित्व दूहूपर झलकैत रहल अछि । सामयिक साहित्यहुपर ओहि सांस्कृतिक परम्पराक छाप स्पष्ट दृष्टिगोचर होइछ जे यथाप्रसंग विवेचित होयत ।

मुन्शीजीक जीवन प्रारम्भहिसँ जाहि परिवेशमे व्यतीत भेल ओ मिथिलाक सांस्कृतिक केन्द्र छल । दरभंगा–राजक शाखा-प्रशाखाक सन्निधिमे मिथिलाक विद्या, कला ओ संस्कृति-सभ्यताक अग्रणी व्यक्तित्व एकत्र होइत रहलाह । संस्कृतिक संगहि लोकभाषाक माध्यमे तकर अभिव्यक्ति एतय निरन्तर प्रवर्तित छल ।

उत्तररामचरितक प्रस्तावनामे ओ सूत्रधारक मुहेँ कहबौने छथि 'मैथिलक गौरवे मानबाक चाही जे अपन सुचारु चरित्र तथा चतुरतासँ मातृभाषाक कोन कथा, मातृभाषाक मातृस्वरूपा संस्कृतहुक विशेष स्नेह-भाजन बनल छथि, तथापि माइक वा मातृभाषाक सहज सिनेह मनुष्यक कोन कथा प्राणीमात्र मध्य स्वाभाविक अछि ताहि मध्य मैथिलवर्गहुसँ कहिओ त्रुटि नहि भेल अछि ।' सुनू :–

श्री श्रीधर गुणधाम मन्त्रीवर नृप नान्यहिक,
ज्योतिरीश्वरे नाम कविवर यश जाहिर जगत ।
विद्यापति, गोविन्द, राम उमा मनबोध कवि,
कर्ण सुकवि जयनन्द नन्दीपति कविलाल पुनु ।
कविवर देवानन्द, मनमोहन मोहन निरत,
कान्हराम कुलचन्द्र हर्षनाथ जीवन सुकवि ।
भानु रसिक आनन्द ल्हालदास आदिहु कते,
मातृवचन अनुराग राखि ग्रन्थ रचना कयल,
जगत जनिक यश गान अनुवादक के गनिअ पुनि ।
गणना अतिविस्तार हम तथापि स्वल्पहि कहल,
कहु के पाओत पार, मैथिलीक कविगणक जग ।।

एहि प्रकारेँ मिथिलाक विद्वान् एवं कविगण संस्कृतक संगहि मातृभाषा मैथिलीक सेवामे जे प्रवृत्ति रखैत अयलाह तनिक चर्चा-अर्चा द्वारा मुन्शीजी अपन प्रवृत्ति-प्रेरणाक सूत्र एतय उद्घोषित कयलनि अछि । प्राचीन कविक संगहि तत्कालीन कविचन्द्र लालदास–जीवनझा-हर्षनाथझा धरि कवि-नाटककारक संगहि तत्कालीन भाषान्तरसँ मैथिलीमे अनुवाद प्रवृत्तिहुक प्रशस्ति देलनि अछि । एहिसँ स्पष्ट होइछ जे मुन्शीजी कवि, नाटककार ओ अनुवादकक रुचि–प्रवृत्तिक अपन परिवेशकेँ सर्वथा अभिव्यक्ति दऽ गेल छथि ।

कुल-परिवार

व्यक्ति अपन व्यक्तित्वक विकासमे आद्याशक्ति कहिऔक, वा जन्मजात प्रतिभा अथवा सहज प्रवृत्ति, बहुत-किछु ओ कौलिकतासँ प्राप्त करैछ। व्युत्पत्ति वा वैषयिक उपपत्ति कहिऔक, परिवार–प्रतिवेशीक अनुगति–संगतिसँ उपलब्ध करैछ, तथा चरम अभ्यास वा प्रतिपत्ति शिक्षा-दीक्षा एवं श्रम-उद्योगसँ। साहित्यशास्त्रक "प्रतिभाव्युपत्तिरस इति हेतुरुदुद्भवे" एहि उक्तिक समन्विति व्यक्तिक व्यक्तित्वविकासमे निहित होइछ।

शारीरिक शास्त्रमे जखन व्याधिदोषक निदान मातृ-पितृकुलक स्वास्थ्य संधानसँ लगौल जाइछ तखन मनोवली मानवक रुचि–प्रवृत्ति ओ प्रतिभा–उपपत्ति आनुवंशिकतामे किएक ने समन्वित होयत ? भारतीय संस्कृतिमे कुल-प्रभावक प्रस्तुति बहुत-किछु एही दृष्टिसँ होइत रहल अछि। पंजीप्रथा आदिक "अतिदूरात् सामीप्यात्" सांख्यशास्त्रीय तर्कक अनुगम किछु एहू दृष्टिसँ कयल गेल अछि।

स्वयं कविवर मुन्शीजी अपन महाकाव्य 'सुभद्राहरण'क अन्तमे स्व-वंश परम्पराक जे उल्लेख कयने छथि ओहिमे अनेक पुरुखाक उल्लेख एहन जे राज्याश्रित रहलाह। साहित्य रचनामे प्रवीण भेलाह। ओ अपन कर्म-धर्ममे सतत तल्लीन रहलाह, जकर बहुत–किछु निवेश हुनक व्यक्तित्वमे स्वतः स्फुट देखना जाइछ।

ओहि वंशावलीमे बलाइन मूलशाखाक बीजी-पुरुष आनन्दकर–सूर्यकर पंजीप्रथा–प्रवर्तक हरिसिंहदेवक अमात्य छलाह एवं करण-कायस्थ पंजीक प्रवर्तक छलाह। तनिक सन्तति–परम्परामे प्रीतिकरक पुत्र अमृतकर छथि जे शिवसिंहक मन्त्रीक संग राजकवि रूपेँ प्रसिद्ध भेलाह, जनिका प्रसंग स्वयं विद्यापति ठाकुर लिखने छथि :–

नीतिनिपुण गुणनाह अंकमे अतिशय आगर।
कोष काव्य व्याकरण अधिक अधिकारक सागर॥
सबकर कर सम्मान सुजनसौं नेह बढ़ाबिअ।
विप्र-दीन-अतिदुखी सबहुकाँ विपद छोड़ाबिअ॥

कायस्थ माह सुरसिद्ध भउ
चन्द्र तुला इव शशिधर ।
कविकंठहार कल उच्चरइ
अमिअ वरिस्सइ अमियकर ।।

अपन वंश–परिचयक क्रममे स्वयं मुन्शी रघुनन्दनदास अपन महाकाव्य 'सुभद्राहरण'क परिशिष्टमे लिखने छथि जे :–

मम वंशज कायस्थ कमलकुल मंत्री श्रीधर ।
संग आनि नृपनान्यदेव मिथिला शासनकर ।।

एही श्रीधरक बनाओल श्रीधर–मन्दिरक खण्डहरमे प्राप्त शिलापृष्ठपर अंकित अछि :–

श्रीमन्नान्यपतिर्जेता गुणरत्नमहारविः
यत्कीर्तिर्जनितो विश्वे द्वितीयः क्षीरसागरः ।
मन्त्रिणा तस्य नान्यस्य क्षत्रवंशाब्जभानुना ।
देवोऽयं कारितो येन श्रीधरः श्रीधरेण तु ।।

एहिमे श्रीधर-मन्दिरक निर्माता श्रीधर अपन परिचय विजेता नान्यदेवक मन्त्रीक रूपमे देने छथि । 'कर्णामृत' सुभाषित ग्रन्थक निर्माता श्रीधरक संग ऐक्य स्थापित करैत मिथिलाक इतिहास–लेखक लोकनिक युक्ति अछि जे हरिहरमन्दिरमे ल. सं. (लक्ष्मणसेन संवत्)क प्रथम उल्लेख ओही मन्दिरमे भेटैछ, पाछाँ विद्यापति अपन कीर्तिलता तथा भागवतक हस्तलेखमे ल. सं. द्वारा समयाङ्कित करैत गेल छथि, जकर अनुसरण मिथिलाक अधिकांश हस्तलेखमे होइत आयल ।

कहल जाइछ जे पालवंशक अन्तिम राजा मदनपालकेँ हरयलाक बाद बंगालक सेनवंशक शासन आदिशूरसँ प्रवर्तित भेल । आदिशूरक चर्चा वाचस्पतिओ 'निजभुजवीर्यमास्थाय शूरानादिशूरो जयति' कहि कयने छथि । कहल जाइछ जे सेनवंशक शासन मिथिलाधरि छल । ओ तेँ द्वारवंग कहि दरभंगाक नाम बंगालमे प्रचलित भेल । सेनवंशक अन्तिम राजा लक्ष्मणसेन परम विद्याव्यसनी छलाह । उत्कलीय जयदेव, मैथिल गोवर्धनाचार्य प्रभृति हुनक सभासद छलथिन । कहल जाइछ जे हुनक एक क्षेत्रीय अनुशासनक हेतु केन्द्र अन्धराठाढ़ी अंचलमे सेहो छल, जतय अनेक गाम–जड़िसेन सेनडीह, लालसेन आदि गाम अन्धराठाढ़ी प्रखण्डमे सेन उपाधिधारी राजपूतलोकनि शतशः संख्यामे ओम्हर बसैत छथि, सेनवंशीय राज्यक अवस्थितिक स्मरण दिआ रहल छथि । ई सभ प्रतीत करबैछ जे लक्ष्मणसेनक पिता बल्लालसेन जे राज्यविस्तारक छलाह तनिक शसनाधिकारी लोकनि एम्हर पदस्थापित रहल होथि । नान्यदेव हुनका लोकनिकेँ पराजित कऽ अपन राजवंशक स्थापना कयने होथि,

सम्भव जे तकरे वर्णन कमलादित्यस्थानक शिलालेखमे विजेता कहिकऽ अंकित कयल गेल हो। नान्यवंशक अन्तिम नरेश हरिसिंहदेवक समय १३२६ धरि कहल जाइछ। बारहम शताब्दीक प्रारम्भसँ लगभग सबासय सालधरि नान्यवंशक शासन मिथिलामे कहल गेल अछि। किन्तु पठानवंशक आक्रमणसँ लक्ष्मणसेनक पराजयक बाद नान्यवंशहुक शासनक अवसान भेलहुपर मिथिलामे लक्ष्मण संवत् (ल. सं.) क प्रचलन रहि गेल जकर उल्लेख प्राचीन लेखक लोकनि करिते रहलाह। कीर्तिलता आदि ग्रन्थमे तकर उल्लेख विद्यापति कयने छथि। पुरुष-परीक्षामे लक्ष्मणसेनक काशीसँ द्रुतगामी नाव द्वारा यात्राक आख्यान सेहो उल्लिखित अछि। तत्कालीन लिखित कर्णामृत ग्रन्थमे श्रीधरदासक पिता बटुकदासकेँ लक्ष्मणसेनक सामन्त कहि उल्लेख भेटैछ।

भऽ सकैछ जे एही राज्य-संक्रमणकालमे सामन्त बटुकदासक पुत्र कर्णामृत-संकलयिता श्रीधरदास नान्यवंशक आश्रय ग्रहण कयने होथि तथा श्रीधर-मन्दिरक स्थापना कयने होथि, जनिका अपन मूलवंशपरिचयमे मुन्शीजी उल्लेख करैत छथि :–

मम वंशज कायस्थ कमलकुल मंत्री श्रीधर–
श्रीधर श्रीधर मूर्तिकेँ अंधराठाढ़ी ग्राममे
स्थापित कय सुरपुर गेला उज्ज्वल कय निज धामकेँ ॥

एही वंशमे बोधिदासक उल्लेख कयल गेल अछि :–

बोधिदास परदार-द्रव्य-हिंसा परित्यागी।
गिरा गौरवित भानु गंगहिक प्रति बड़ भागी
गंगे याहि पवित्रताम् ई वचन सुनाओल
पुरुष-परीक्षा मध्य ताहि विद्यापति गाओल ॥

पुनः तद्वंशक विख्यात कवि अमियकर कहल गेल छथि जे शिवसिंहक सचिव कवि रहथि, तनिक अपन वंशावलीमे मुन्शीजी उल्लेख कयने छथि :–

ओइनिवारकुल-नृप किरीट शिवसिंह प्रतापी।
जनिक अमियकर सचिव बोधिवंशज यश-व्यापी।
मिथिलाराजक अभयदान ओ पुनि लय आओल।
गाढ़ समय मन्त्रिव्य धर्मपालक यश पाओल ॥
हुनक रचित कविता कलित कीरति कै राखल अचल।
जनिक गुणावलिगानमे विद्यापति ई पद रचल ॥

विद्यापतिक ई पद 'नीतिनिपुण गुणनाह अंकमे अतिशय आगर' पूर्व उल्लिखित अछि।

तदुत्तर हरिसिंहदेवी कायस्थ – पंजीप्रबन्धक अनुसार आनन्दकर + सूर्यकर (हरिसिंहदेवक मन्त्री ओ करण – कायस्थक पंजीप्रबन्धकार) आनन्दकर → प्रीतिकर → अमृतकर (ओइनिवारवंशीय शिवसिंहक मन्त्री ओ राजकवि) → विजयकर → रघुनाथ + गोविन्ददास (कंसनारायणक मन्त्री ओ राजकवि) → रघुनाथदास → अच्युत → नाथदास → वाङ्मणिदास → नारायणदास → हरषसिंहदास → अभयरामदास → भाइलालदास + पलटसिंहदास → रघुनन्दनलालदास + हरिनन्दनलालदास । एवंप्रकारें हिनक पूर्वापर पुरुषाक उल्लेख भेटैछ ।

एवंक्रमें देखल जाइछ जे नान्यवंश, कार्णाटवंश, आइनिवारवंशसँ लय खण्डवालाकुल राजवंश धरि हिनक पूर्वापर पुरुषालेकनि राजाश्रयमे रहैत अयलाह । मुन्शीजी स्वयं राजदरभंगाक आश्रयमे अपन मुन्शीगिरीक काज चरितार्थ करैत अयलाह । करण (कर्ण) कायस्थक करण शब्द पूर्वहिसँ राज्यव्यवस्थाक हिसाब–किताब लिखनिहार शब्द प्रचलिते छल से निरन्तर कुलामयमे सार्थक रहल ।

'करण' शब्दक अनुगमहिसँ कायस्थ वंशमे मुन्शीगिरीक मुस्लिमकालीन उपाधि प्रचलित रहैत आयल अछि । मुन्शी प्रेमचन्द आदि जकाँ मिथिलहुमे किछु कायस्थ वंशधर दीवानगिरीक संग मुन्शी उपाधि रखैत अयलाह ।

जीवन-वृत्त

मुन्शी रघुनन्दनदासक जन्म १२६८ साल आश्विन कृष्ण पड़िब तदनुसार १८६० ई. मे अपन मातृक कूआ-कमलपुर गाममे भेलनि। ओहि समय हिनक पिता महाराज कुमार गोपीश्वरसिंहक दीवान छलाह। हिनक लालन-पालनक विशेष भार पित्ती बच्चादासपर रहनि जे अपन पूर्वक निवासस्थल बिसौल गाममे रहैत पाँचम वर्षमे खड़ी धराओल, मिथिलाक्षर तिरहुतामे आँजी सिद्धिसँ अक्षरारम्भ कराओल। पुनः एक वर्षक बाद मातामह वंशीधर दास मातृकहिमे आनि तत्कालीन प्रचलित शिक्षा-प्रवृत्तिक अनुसार अपने दलानपर अवस्थित पाठशालामे गुरु अमृतलालदाससँ हिनका चाणक्यनीति, अमरकोश घोखाओल, बिटगरहाँ–सबैया-ड्ढ़ा-धमौचा एवं देशी हिसाबक अर्जा लिखाओल-सिखाओल तथा लीलावतीक गणित-श्लोक एवं गीतगोविन्दक गीत-रीतिक अभ्यास कराओल। दस वर्षक भेलापर पुनः पित्ती भाइलालक आग्रहेँ पैतृक बिसौल आनल गेलाह ओ एतय हुनक देख-रेखमे तत्कालीन तालिमी सिलसिलाक अनुसार हिनका फारसीक शिक्षा आरम्भ कराओल गेल। भाइलालदास स्वयं फारसीदाँ छलाह ओ हिनका स्वयं फारसीक तालिम देबय लगलथिन। ओही बीच पिता गाम आबि हिनक फारसी दिस प्रगति देखि अपना संग दरभंगा-कबराघाट ड्यौढ़ीमे महाराजकुमार गोपीश्वर सिंहक दीवानगिरी करैत अपन बालककेँ ओतहि राखि आजिम-फाजिल खुरशेदअलीसँ तालिम दिआओल। ओतहि आठमे वर्षक वयसमे ई इन्साये-खरीफा, बहारेआजम, गुलिस्ताँ-बोस्ताँ आदिक बहुतो अंश बरजुवाँ कय लेल जकरा मजलिसमे पढ़िकय सुनबैत ई अपन पिताक दोस्तलोकनिक बीच प्रियता प्राप्त करथि। एही बीच १८६८ ई. मे शुभंकरपुरमे पलटदासक मृत्यु भऽ गेलनि। पित्ती हिनका गाम लऽ गेलथिन, पुनः ओतहि घरेपर ई पढ़बा-लिखबामे लागल रहलाह। बादोमे कमोवेश शुभंकरपुर डेउढ़ीसँ हिनक सम्पर्क जुड़ले रहल। महाराज गोपीश्वरसिंह हिनक संस्कारसँ परिचित रहि हिनक पिताक सेवाक लेल सहानुभूतिशीलो छलाहे। सोलहे वर्षक वयसमे १८७६ मे हिनका गामसँ बजबाय अपन कार्यालयमे नियुक्त कयलनि।

सोड़ह वर्षक वयस कर्मक्षेत्रमे प्रवेशक हेतु मान्य बुझल जाइत छल। जहिना स्त्री

षोडशी भेलापर पूर्णवयस्का मानल जाइत छलि तहिना युवको बालिग बुझल जाथि । रामायणकालहुमे ई प्रचलित छल । विश्वामित्र द्वारा यज्ञरक्षार्थ रामक याचनापर दशरथ कहने छलथिन ''ऊनषोडशवर्षों यं रामः'' राम एखन सोड़ह वर्षक नहि भेल छथि तैँ नाबालिग रामकेँ रक्षाभार देबामे हम असमर्थ छी ।

महाभारतहु कालमे भीष्मक वृद्धतामे शौर्य देखि 'षोडशवर्षवत' कहल गेल । षोडशवर्षीय अभिमन्युक रणरंग वर्णिते अछि । मध्यकालहुमे जखन यौद्धिक जीवनक आग्रही क्षत्रिय कुमारक हेतु 'वर्ष अठारह क्षत्रिय जीबय' कहबी प्रचलित छल तखन सोड़ह वर्षीय राजपूत कुमारक रण-निरत जीवनक अवधि दुइ सालक अवधिक प्रशस्तिकेँ प्राप्त कयलक ।

अपन कर्मठता ओ साहित्यिक रुचि-प्रवृत्तिक कारणेँ ओ अपन आश्रयदाता एवं कवि–साहित्यिक कुमार गोपीश्वरसिंहक प्रियभाजन भेलाह । हुनक दरबारमे तत्कालीन मिथिलाक पण्डित गुणी–गवैया कलाविद् लोकनिक जमघट चलैत छल, कारण मुख्य दरभंगा–राजक प्रबन्ध कोर्ट ऑफ वार्ड्सक अधीन छल । ओतय परम्परागत राजकीय सम्मान–दान-संरक्षण चलैत छल, तकर बहुत-किछु परिपालन ओही राजवंशक प्रमुख शाखाक अधिष्ठाता रहने ओ स्वयं कवि-रसिक रहने महाराजकुमार गोपीश्वरसिंहक दरबार भरल रहैत छल ।

एतहिसँ मिथिलाक मकरन्दानुसारी पंचांग प्रकाशित होइत छल, कर्मकाण्ड आदिक शोध-प्रकाशन, राजकीय पर्व-उत्सव एवं मैथिलीक काव्य-साहित्यक संवर्धन-संरक्षण प्रवर्तित छल ।

हिनक सभामे चन्दाझा-भानुनाथझा – हर्षनाथझा सन पण्डित – मनीषी उपस्थित होइत छलाह । महाराज महेश्वर सिंहक भ्राता परम नैष्ठिक गुणेश्वरसिंहक आकर्षण एहि स्थानकेँ महत्त्व दऽ चुकल छल । स्वयं गोपीश्वरसिंह, स्वनामसम्बद्ध 'गोपीश्वर– विनोद'क रचनासँ साहित्य – रसिक वर्गक आकर्षण केन्द्र बनि गेल छलाह । हुनक सामीप्य ओ दरबारक विद्या-कलाक पोषण-प्रवृत्तिसँ मुन्शीजीक रुचि-प्रवृत्ति निरन्तर उद्वेलित ओ प्रेरित होइत रहल । साहित्यिक प्रवृत्तिक कारणे तरुण रघुनन्दनक संस्कार बरोबरि संवर्धित होइत रहल । एहि बीच गोपीश्वरसिंह हिनक पढ़बा-लिखबाक अभिरुचि देखि अपन पुस्तकालयक कार्यभार सौँपि देल जाहिसँ हिनक अध्ययन-प्रवृत्ति सर्वथा सार्थकता प्राप्त कयलक । तत्कालीन पत्र-पत्रिका पढ़बाक एवं तदुपयुक्त रचना करबाक रुचि जाग्रत भेल । ओहि समयक हिन्दीक पत्र-पत्रिकामे व्रजभाषाक कविताक प्रकाशन विशेष रूपेँ समस्यापूर्तिक विधासँ विशेष लोकप्रिय छल । काशीसँ 'कवि– मण्डल,' सीतापुरसँ 'समस्या-पूर्ति', फर्रूखाबादसँ 'कवि-चित्रकार,' पटनासँ 'कवि-समाज' आदि पत्रिकामे समस्या-पूर्तिक अनेक रचना हिनक प्रकाशित भेल, जाहिपर हिनका अनेक बेर ग्रन्थ ओ नगद पुरस्कार

प्राप्त होइत रहलनि तथा साहित्य रचनाक हेतु प्रोत्साहित होइत रहलाह ।

एहि बीच हुनक साहित्यिक प्रवृत्ति मैथिली, व्रजभाषा, खड़ीबोली हिन्दी ओ किछु उर्दू-फारसीक गीत, छन्द, दोहा-कवित्त ओ शेरक रचना-दिस छल । किछु संस्कृत नाटक अध्ययनक संग अनुवादक अभ्यास चलैत रहल जे बादमे हिनका मैथिलीक सफल नाटककारक रूपमे प्रशस्त कयलक ।

१९०१ ई. मे गोपीश्वर सिंहक मृत्युक बाद जखन हुनक बबुआनीमे प्राप्त आदिल प्रगन्ना दरभंगा राजमे समाहित भऽ गेल तखन १९०३ ई. धरि ई राजदरभंगामे एकाउंटेंटक पदपर काज करैत छलाह । किछु दिन पाछाँ हिनक कार्यक्षमता देखि महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक प्राइवेट आफिसमे राखल गेलाह । तीन वर्ष धरि राजदरभंगामे आश्रय लेलनि । मुदा ओही बीच अपन पित्ती भाइलालदासक मृत्युक कारणेँ पारिवारिक देखरेखक हेतु हिनका राज-सेवाकेँ छोड़ि घरपर अवकाश लेबय पड़लनि एवं अपन छोट भाइ हरिनन्दनदासकेँ वकालत पढ़बाक व्यवस्था करय पड़लनि, संगहि अपन सम्मिलित परिवारक पितिओत भाइलोकनि वासुदेवदास, शुकदेवदास एवं रमानाथदासक शिक्षा-दीक्षाक देखरेखक कारणेँ अपन घर-गृहस्थीक व्यवस्थाक हेतु हिनका नोकरी छोड़ि घरहिपर निवास करय पड़लनि । परंच, गृह-प्रबन्धमे व्यस्त रहितहुँ ई अपन स्वाध्यायमे लागल रहलाह तथा साहित्यक अनुशीलनमे निरत छलाह । गार्हस्थ्य व्यवस्थाकेँ सुचारु रूपसँ चलबैत रहलाह । तत्कालीन पत्र-पत्रिकामे तत्कालीन प्रथाक अनुसार समस्या–पूर्ति आदि फुटकर रचना प्रकाशित करैत रहलाह तथा नाट्य–साहित्यक अध्ययन-पूर्वक नाटक-रचनामे प्रवृत्त भेलाह । सावित्री-सत्यवान् नामक नाटक लिखलनि तथा राधाछविमाधुरी नामक व्रजेश्वरी राधाक नखशिख वर्णनात्मक कवितापुस्तकक रचना कयलनि ।

एहि बीच जखन हिनक अनुज हरिनन्दनदास वकालत आरम्भ कयलनि तथा हिनक पितिऔत भाइलोकनि अपन काज-धन्धा करबामे क्षम भेलाह तखन मुन्शीजी पुनः राजसेवामे अयलाह । राजदरभंगाक बरहगोड़िआक बबुआन राजकुमार जनेश्वर सिंह सखबाड़ गामक निकटहि फुलवन-देवीपुर गाममे अपन जमीन्दारी कीनि ओकर व्यवस्थाक हेतु हिनकहि राखल ।

ज्ञातव्य जे जनेश्वरसिंह महाराज लक्ष्मीश्वरसिंहक परम प्रियपात्र छलाह । ओ हिनका सर्वाधिक सामीप्य दैत छलथिन । अतएव ओ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक मृत्युक बादो महारानी लक्ष्मीवतीक पारिवारिक समाङ बनल रहलाह । फलतः जनेश्वरी देवी बरोबरि अपन पतिक मृत्युक बाद महारानी लक्ष्मीवतीक डेउढ़ी दिलखुशबागमे रहय लगलीह । मुन्शीजी हुनक संगहि दरभंगा रहि हुनक इस्टेटक काज सम्हारैत रहलथिन ।

जखन दरभंगा – राजपरिवारक आन्तरिक परिस्थितिक कारणेँ महारानी लक्ष्मीवती दरभंगा डेउढीसँ आबि स्थायी रूपेँ काशीवास करय लगलीह तखन हुनका संग जनेश्वरीदेवी

सेहो काशी आबि गेलीह ओ मुन्शीजीकेँ सेहो काशी आबय पड़लनि । तीर्थवासक संगे इस्टेटक काज लौकिक-पारलौकिक दूहूक योगायोग चलैत रहल ।

एक अंग्रेजी कवि ग्रामीण शिक्षकपर कविता लिखैत हुनका गामवासीक प्रत्येक काज-प्रयोजनमे सहायक रूपेँ चित्रित कयने छथि । मुन्शी ताही प्रकारेँ समाजक सौहार्द-भाव रखनिहार व्यक्ति छलाह । ग्रामवासीकेँ व्रत पावनितिहार ओ संस्कारक दिन–मुहूर्त तकयबाक काज पड़ैक, ई पोथी-पतरा ज्योतिष-धर्मशास्त्रक विचार देथिन । ज्वर-अपच होइक तँ दवाइ देथिन । होमियोपैथीक पारिवारिक चिकित्साक ज्ञान रखैत छलाह । पर-पंचैती मामिलाक विचार करबाक होइक तँ मुन्शीजीक मुन्शीगिरी तकर पूर्ति करैक । आमोद-प्रमोदक बात होइक तँ गबैयाक हेतु गीत लिखि देथिन, नाटकमंडलीक लेल नाटक तैयार कऽ देथिन । मिथिलाक प्रसिद्ध नर्तक दरबारीदासकेँ ई विशेष प्रोत्साहन देनिहार छलाह । उमाकान्तझाक नाट्यमंडली मिथिला नाट्यमंचक विशिष्ट प्रेरक छलाह । एहि प्रकारेँ ई प्रसिद्ध सामाजिक लोक छलाह । चैपड़ि-सतरंजक खेलाड़ी-रूपमे ई ग्रामवासीक गृहमनोरंजनमे योग दैत रहलाह । हिनक सखबाड़स्थित दलान निरंतर समाजक जुटानक हेतु केन्द्र बनल रहैत छल ।

हिनक पारिवारिक जीवन सेहो सफल छल । राजदरभंगाक नोकरीसँ अवकाश लऽ अपन मध्यकालीन जीवनमे ई परिवारक शिक्षा-दीक्षा ओ जीविका-उन्नयनक हेतु समाङकेँ प्रेरित करबामे निरन्तर लागल रहलाह । छोट भाय हरिनन्दनदास दरभंगाक नामी वकील छलाह । दरभंगाक नगरपालिकाक ओ सफल अध्यक्षो भेलाह । शुकदेवदास सेहो कानूनी व्यवसायमे सफलता प्राप्त कयलनि । ओहि समयमे शिक्षित समाज सर्वाधिक कानूनी व्यवसायमे लागथि । ओकरे माध्यमे नागरिक जीवनकेँ सफल करथि । पूर्वक कायस्थ-परिवार जहिना जमीन्दारी युगमे देवानगिरीमे लागल रहथि, कारपरन्दाजी करथि, तहिना वकालत करबामे हिनकालोकनि विशेष प्रवृत्त देखल गेलाह । सखवारक मुन्शीजीक परिवार कानूनी व्यवसायमे विशेष प्रसिद्धि प्राप्त करैत रहलाह । संगहि देशभक्तिक भावनामे रङि स्वतन्त्रता-संग्राममे हिनक पारिवारिक सदस्य विशेष अग्रसर देखल गेलाह । हिनक आत्मज नरेन्द्रनाथदास स्वतन्त्रता सेनानीक रूपमे, लेखक-समीक्षक रूपमे ख्यात रहलाह तथा विधायक रूपमे प्रान्तक प्रतिनिधित्व कयलनि ।

कहल जाइछ 'किरिया देखिहऽ मरणक बेरि' से जीवनक क्रिया-कलाप ओ संस्कार-विचारक दिग्दर्शन मरण वरणसँ कयल जाइछ । मातृभाषाभक्त, मातृभूमि-वत्स मुन्शीजीक मृत्यु मातृ प्रयाण–दिवसहिमे होयव लिखल छल । हुनक मायक मृत्यु आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशीमे भेल छलनि । १९४५ ई. क ओही तिथिमे ''ओहो पचासी वर्षक वयसमे अन्तिम प्रयाण कयलनि । एहि प्रसंगक उल्लेख करैत हुनक छोट भाय स्व. शुकदेवदासक पुत्रवधू श्रीमती जानकी देवी लिखैत छथिन ''ओहि दिन बाबूजीक (हम सब सँह सम्बोधित करै

छलिअन्हि) मायक वार्षिक श्राद्ध छलन्हि । श्राद्ध कए कऽ उठलाह तँ अपन पत्नीकेँ बजा कए कहलथिन्ह जे आइ एखन हमर माए जे आयल छलीह, कहलन्हि जे बौआ चलू । से हम आइ चलि जाएब । एकरा बाद स्वाभाविक रूपसँ स्वल्प भोजन केलैन्हि । आ ओही दिन गोलोककेँ प्रस्थान कऽ गेलाह । माएक आराधक माएक आज्ञासँ हुनका संग चल गेलाह ।''

वास्तवमे मातृभक्त, मातृभूमिसेवी, मातृभाषा-आराधक महान् आत्मा रघुनन्दन दासक मृत्यु उचिते मातृस्मृतितिथिएमे भेलनि । ई हुनक जीवनक चरम उपलब्धि कहल जायत । ओ पुण्यतिथि छल आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी १३५३ साल, १९४५ ई. ।

रचनावली

मुन्शी रघुनन्दनदासक व्यवसाय राजसेवा भने रहल हो किन्तु हुनक अध्यवसाय विशेषतः साहित्य-लेखन छल। मौलिक रचनाक संग अनुवाद–कार्यमे ओ निरन्तर संलग्न रहैत अयलाह। धार्मिक प्रवृत्ति रहने पौराणिक व्रत -कथा आदिक मैथिली-भाषान्तर करबामे सेहो हुनक अभिरुचि देखल गेल। नाटककार रूपमे हुनक प्रसिद्धि छले। अन्तमे महाकाव्यक रचनासँ मैथिलीक प्रथम महाकाव्यकार रूपमे ओ सर्वाधिक प्रथित भेलाह। एकर अतिरिक्त खण्डकाव्य एवं मुक्तक काव्यहुक रचना करैत काव्य-रचनाक विभिन्न क्षेत्रमे यशस्विता प्राप्त कयलनि। मिथिला-मैथिलीक उन्नयन हेतु अनेक प्रेरक रचना सेहो सामयिक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल।

किन्तु, तत्कालीन कोनो प्रकाशन–संस्था द्वारा विधिवत् प्रकाशनक व्यवस्था नहि रहने हुनक अनेक रचना अप्रकाशिते रहि गेल अथच अप्राप्य सेहो भऽ गेल। अथापि जे रचना प्राप्त अछि प्रकाशित वा अप्रकाशित रूपमे प्रसिद्ध भऽ चुकल अछि, से निम्नांकित थिक :–

१. सवित्री नाटक
२. मिथिला नाटक
३. उत्तररामचरित (भवभूति-रचित संस्कृतनाटकक अनुवाद)
४. सुदर्शन नाटक (पौराणिक कथाश्रित)
५. सुभद्राहरण (महाकाव्य)
६. वीर बालक (खण्डकाव्य)
७. दूताङ्गद व्यायोग (उपरूपक)

एतेक मैथिली-रचना प्रकाशित भऽ चुकल। एहिमे कतोकक पुनर्मुद्रण सेहो भेल अछि।

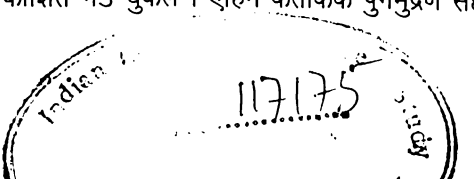
117175

एकर अतिरिक्त अप्रकाशित किन्तु पूर्वप्रसिद्ध रचना अछि :–

१. मैथिली शिक्षावली
२. गीत-संग्रह (महेशवाणी-नचारी आदि)
३. हरतालिका व्रतकथा (गद्य-पद्य)
४. अन्यान्य व्रतकथा (पद्य)

एकर अतिरिक्त अन्य भाषामे सेहो प्रकाशित रचना अछि :–

१. पावसप्रमोद (हिन्दी)
२. भर्तृहरिनिर्वेद (हिन्दी नाटक)
३. राधाछविमाधुरी (ब्रजभाषा)

फुटकर रचना पत्र-पत्रिका आदिमे समस्यापूर्ति अछि ।
अपन रचनाक प्रसंग मुन्शीजी अपन काव्यभूमिकामे लिखने छथि :–

नृपकुल-सेवा-निरत बहुत निज वयस गमाओल ।
कविजन संगहिँ क्रमहि काव्य-रचना मन-लाओल ।।
जखन जेहन मति देथि अम्बिका से र चि लेलहुँ ।
मैथिलि-हिन्दी वचन मध्य बहु रचना कैलहुँ ।।

नाटक

'काव्येषु नाटकं रम्यम्' प्रसिद्ध सूक्ति अछि । दृश्य-श्रव्य सम्मिलित, लोकवृत्त-अनुवृत्त, साहित्य-संगीत संवलित नाटक विधा भारतमे पुरातन कालहिसँ प्रचलित रहल अछि । रामायणकार अयोध्याक वर्णन प्रसंग 'वधू-नाटक संघेश्च' कहि ओकरा महत्त्व देने छथि, परम भागवत व्यास द्वारकाक कुमार साम्बअनिरुद्ध आदिकेँ नाट्य क्रीड़ा करैत चित्रित कयने छथि ।

मिथिला जे पुराण-कालहिसँ विद्या-कलाक भूमि कहल गेल अछि ततय दृश्य-श्रव्यक परम्परा प्रवर्तित रहब स्वाभाविके थिक । संस्कृत-नाटकक रचनामे एतय कविक लेखनी निरन्तर प्रवृत्त रहल अछि । मैथिली साहित्यक इतिहासक प्रथम वरेण्य कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक नाटक उपलब्ध अछि । विद्यापति स्वयं गीतकारक संग नाटककारक रूपमे प्रसिद्ध छथि । मैथिलीक मध्यकालीन इतिहास तँ मुख्यतः नाटक-रचनाकेँ अंकित करैत अछि, नेपालसँ आसाम धरि मैथिलीक नाटक प्रचरित रहल अछि । चन्दा झाक बादहु वर्तमान युगक काव्यप्रवृत्तिमे हर्षनाथ झा-जीवन झा प्रभृति नाटक रचना द्वारा उल्लेखनीय छथि । मुन्शी रघुनन्दनदास सेहो ओही वातावरणमे नाटक-लेखनक कलाकेँ अपनौलनि तथा यशस्विता प्राप्त कयलनि ।

दरभंगा-राजक एक प्रमुख शाखाक साहित्यकला-रसिक गोपीश्वरसिंहक दरबारमे पालित–आश्रित मुन्शीजी नव वयसहिमे ओतय जे सभ नाटमंडलीक अभिनय होइत छल तकरा बरोबरि देखैत रहलाह एवं प्रौढ़ वयसमे जखन बरहगोरियाक बबुआन जीवनेश्वर सिंहक संग कलकत्ता प्रवासमे रहथि तखन अलफ्रेड कोरन्थियनक रंगमंचक नाटक देखबाक प्रचुर अवसर भेटनि । ओहि समय बंगालमे डी. एल. राय, गिरीशचन्द्रसँ लय माइकेलक नाटक सभक मंचन लोकप्रिय छलैक, तकरो देखबाक अवसर भेटलनि, वंगीय रंगमंचक संग, पारसी नाटक-मंचक सेहो अभिनय देखबाक प्रसंगसँ हिनक नाट्य रचनाक प्रवृत्तिकेँ प्रेरणा भेटैत रहलनि ।

एही कालमे भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक 'भारत दुर्दशा' नामक नाटक देश–भक्तिक प्रेरणा जगयबामे बड़ कारगर सिद्ध भेल । 'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नतिको मूल' हुनक ई मन्त्र-वाक्य मिथिलोक साहित्यिक प्रवृत्तिकेँ मिथिला–मैथिलीक प्रति उद्रेक जगयबामे प्रेरणाप्रद भेल । मुन्शी रघुनन्दनदास एही भावनाकेँ अपन मिथिला-नाटकमे उद्‌बोधन देबाक सफल प्रयास कयलनि तथा ओहि समय एतय नाटक-मण्डली सभमे विशेषतः हिन्दीक माध्यमे जे नाटक खेलायल जाइत छल ततय मिथिला-भाषाक माध्यमे मिथिलागौरवबोधक एवं तत्कालीन समाज-सुधारक प्रवृत्तिकेँ जगयबाक लेल एहि नाटकक रचना कय अपन उद्देश्यकेँ सफल कयलनि ।

मिथिलामोदक प्रर्वतक–सम्पादक म. म. मुरलीधरझा एहि नाटकक प्रकाशनमे योगदान दैत भूमिकामे स्पष्ट कयलनि अछि जे ''आइ–काल्हि आन देशक कोन जे मिथिलहुमे प्रायः गोटेके एहन ग्रामाभास होएत जाहि महँक रहनिहार नाटक नहि बुझैत होथि । कारण मिथिलहुमे तँ अनेक गोटे नाटकमंडली स्थिर कै शकुन्तला–हरिश्चन्द्र इत्यादि करैत छथि, जाहि नाटक सबहिक आधार हिंदी भाषामय थोड़ मूल्यक किताबे होएत । ई असमंजस जानि परमचतुर भाषाप्रवीण देशकालज्ञ सखबाड़ ग्रामनिवासी मैथिल करणकायस्थ वंशावतंस मुन्शी श्री रघुनन्दनदास साम्प्रतिक मिथिला देशमध्य रहनिहार जनताक अधिकांश मैथिल ब्राह्मण ओ करणकायस्थक चरित्रकेँ देखि–बूझि ई मिथिला नाटक आलस्य द्वेष ईर्ष्यादि रोगसँ ग्रस्त लोकनिक हेतु महौषधि बनौलन्हि अछि ।''

म. म. झाजीक संकेतक अनुसार तत्कालीन समाजमे नाटकक लोकप्रियता बढ़ल छल एवं हिन्दीक माध्यमेँ ओकर प्रचार देखि मुन्शीजी मातृभाषाक माध्यमेँ एहि विधाकेँ अपनाय मिथिलाक एक पैघ अभावक पूर्ति कयलनि एवं शास्त्रीय नाटक-परम्पराक संगहि तत्कालीन प्रचलित नाट्यमंचक अनुकूल तथा देशक गौरवगाथा जगाय वर्तमान कालिक सामाजिक ह्रासक प्रतिक्रियास्वरूप सुधारक पथकेँ प्रशस्त कयलनि ।

युग-कालक प्रभाव देखबैत ईर्ष्या-आलस्य आदि मनोभावकेँ पात्र बनाय, अरूपकेँ रूप दय रोचकता अनलनि । 'प्रबोध चन्द्रोदय' आदि संस्कृत नाटकमे एकर प्रयोग भऽ चुकल छल एवं भारतेन्दुक 'भरतदुर्दशा'मे सेहो एहि शैलीकेँ मान्यता भेटि चुकल छलैक । मैथिलीमे तकर अभिनिवेश करबाक श्रेय मुन्शीजीकेँ प्राप्त छनि ।

मिथिलाक 'आशूद्रान्तं कवीनाम्' वचन-प्रचारकेँ उद्‌योतित करबाक लेल नाटककार मुख्यतया काशीक पण्डित ओ वंगदेशीय सुधीकेँ उपस्थित करबाक प्रयोजनहुक एक लक्ष्य छल । मिथिलाक प्राचीन विद्या–वैभवक ह्रासक संग नव्यन्यायक एवं गौड़ीय रस-साहित्यक सर्जनाक नदिया प्रभृति केन्द्र बंगालमे प्रतिष्ठित छले, कम्पनी एवं ब्रिटिश शासनकालमे बंगालक प्रतिभा मिथिलहुमे व्याप्त छल तथा संस्कृत स्नातकक लेल काशीक विद्यापीठ विद्यातीर्थ बनले छल । मुन्शी जी विशेषतः एहि दूहू स्थानक विद्वान् नागरिकेँ प्रविष्ट कऽ

मिथिलाक संस्कारकेँ प्रदर्शित कऽ देश–गौरवक दृश्य जे प्रस्तुत करौलनि ओ विशेष संगत बुझना जाइछ। गौरवक संग समाजमे जे हीनभावना बढ़ि रहल छल तकरो परिहारक प्रेरणा दैत मुन्शीजी नाटककेँ विशेष आकर्षक बनौलनि जे हुनक कवि–दृष्टिक दूरदर्शिता व्यक्त करैछ।

पारसी मंचक नाटक जकाँ तीन अंकमे नहि राखि शास्त्रीय पद्धतिपर 'पंचाधिका दशपराः'क अन्तर्गत मिथिला नाटक छौ अंकमे विभाजित अछि।

प्रस्तावनामे पूर्वपद्धतिक अनुसार दर्शक-समाजकेँ समय-प्रसंग नाटकक नाम, रचनाकार आदिक परिचयपूर्वक नेपथ्यसँ मिथिलहुमे कलिक प्रवेश निम्नांकित नेपथ्यवाक्यसँ कराओल जाइछ :–

सम्प्रति कलिक प्रभाव कतै नहि ईर्ष्यादिक जनि दासी।
मिथिलहु मुदित विचर से घर-घर के नहि तनिक उपासी॥

जकर उत्तरमे मिथिलाक महिमा व्यक्त करैत सूत्रधार कहैत छथि :–

जे मिथिला भूवि त्रिभुवनरक्षिणि आदिशक्ति प्रकटाय।
दुर्जन दुष्ट निशाचर जग जत तकरा देल नशाय॥
जे जगदम्ब ताहि रक्षासँ की जानत चित भाव।
मिथिला देश मध्य की व्यापत क्रूर कलिक परभाव॥

संगहि कलि-सहचर ईर्ष्यादि अरूप मनोभावक स्वरूप दर्शनीय बनल अछि। कलिक सत्त्व–बल जाहि विकारी मनोभाव-बलपर टिकल अछि तकर आकृति-प्रकृतिक चित्रण, यथा :–

क्रोध लोभ आलस्य ओ ईर्ष्या पिशुनहुसँ रहि संग।
छल ओ अनाचार यदि संगी, परम प्रवीन अनंग॥
आनहु सबहु बजाय शीघ्र अति, सब आबथु एहि बेरि।
जाथु सबहु मिलि सावधान भै, जनु आनथु किछु देरि॥

कलिक दरबारक बाद मिथिला ओ दुइ आचार-विचारवान् मैथिलक कथोपकथन द्वारा महाभारतक युद्धक अनन्तर क्रमशः कलिप्रभावक वर्णन-पूर्वक "याज्ञवल्क्य-गौतम बनाओल मार्ग थीक, ताही पथेँ सबहुकेँ चलबाक थीक" एही संकल्पक संग प्रथम अंक समाप्त होइछ।

दोसर अंकमे वंगीय नागरिक द्वारा मिथिलाक भ्रमण एवं एक कुम्हार द्वारा गीतगोविन्दक गान सुनि, वार्तालाप करैत 'धन्यास्ति मिथिला यत्र कुम्भकारोपि पण्डितः' शब्दें विस्मय व्यक्त करैत, जन बनिहारोकेँ संस्कृत गान सुनैत. गीत-गोपीपतिक गीतकेँ

गीतगोविन्दक रचनाक संग समन्वित करैत [illegible] होइत छथि । तथा ग्राम-पल्लीमे घर-घर विद्याप्रचार देखि चकित फिरैत छथि ।

तेसर अंकमे धर्म एवं हुनक सहचर धैर्य आदिक कथोपकथनसँ विष्कम्भक द्वारा अग्रिम वृत्तक पूर्वाभास भेटैछ। तदुत्तर जे सब पात्र प्रवेश करैछ, ताहिसँ सामाजिक स्थितिक ह्रासक क्रममे बिकौआक चर्चा करैत हरिसिंहदेवी प्रथाक दुरुपयोगक घटना व्यक्त होइछ, फूट-वैमनस्यसँ व्यथित मिथिला एवं ऐक्यक संवाद चलैछ ।

चारिम अंकमे दुर्मुख-दुःसाहसक संवादसँ आरम्भ होइत क्रोध-लोभ-आलस्य आदिक क्रमशः प्रभाव विभिन्न पात्रक कथोपकथनसँ व्यक्त कराओल जाइछ :-

"नाम मिथिला रहलि छथि, भेल गौरवक अन्त ।"

कलिक अभियान बहुत-किछु सफल कहल जाइछ । लोभ, पैशून्य, अनाचार [illegible] अपना-अपनी सफलताक बखान करैछ ।

छठम अंक मिथिला एवं अपन नैहरक आवेशिनी सीताक प्रवेश कराय निद्रामग्न सन्ततिकैँ जागृतिक गीत द्वारा उद्बोधन पूर्वक भविष्यनिर्माणक प्रेरणा दैत भरतवाक्यसँ समाप्त कयल जाइछ :–

बरिसय मेघ सस्य परिपूरित दुरित दूर भै भागौ ।
-सबहिक मन भऽ अचल भावसँ धर्म–कर्मरुचि जागौ ।।

मिथिला नाटक मैथिलीभाषी समाजमे तेहने प्रेरक सिद्ध भेल जेहन भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक 'भारतदुर्दशा' नाटक भारतीय जागरणक दिशाकैँ प्रशस्त कयलक । मिथिलाक चिरन्तन गौरवक स्मरण दिआय वर्तमान स्थितिक विपन्नता दिस दृष्टिपात करबैत पुनः नवजागरणक प्रेरणा देबामे ई रचना अत्यन्त सफल सिद्ध भेल । एहि नाटकक प्रकाशन महामहोपाध्याय पं. मुरलीधरझाक सम्पादकत्वमे १९२३ ई.मे काशीसँ भेल । किन्तु एकर मंचन उमाकान्तझाक प्रसिद्ध नाट्य कम्पनी द्वारा १९१६-१७ मे भेल छल । एवं तदुत्तर दुर्गापूजा आदिक अवसरमे पिंडारुछ-कोइलख आदिक ग्राम-मंचपर एकर अभिनय होइत रहल । प्रकाशनक अनन्तर विद्यालयक छात्रलोकनि एकर अनेक अंशक अभिनय करैत मिथिलाक नवजागरण हेतु लोकजीवनकैँ उद्बोधित करैत रहलाह । प्राचीन नाटकमे 'पारिजातहरण' कीर्तनियां नाटक एवं नवीनमे 'मिथिला-नाटक'सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त करैत रहल ।

एहि नाटकमे जतय नाट्यशास्त्रक अनुकूल प्रस्तावना, नान्दीपाठ, भरतवाक्य एवं विष्कम्भक तथा स्वगत, जनान्तिक, आकाशभाषित एवं कथोपकथनक निवेश अछि तथा देशक उत्थान-पतनक निर्देश अछि ओ पुनर्जागरणक प्रेरणा-सन्देश अछि ताहि सभसँ एकर

महत्त्व स्वतः सिद्ध होइछ। एहि नाटकक लेखनसँ मुन्शी जी मिथिलाक नाटक-परम्पराकेँ पुनरुज्जीवन दैत 'काव्येषु नाटकं रम्यम्'क उक्तिकेँ सार्थक कऽ गेल छथि।

एकर अतिरिक्त ओ 'सुदर्शन' नामक पौराणिक आख्यानक आधारपर नाटक लिखलनि जे एखन अनुपलब्ध भऽ गेल अछि एवं 'उत्तररामचरित'क हिन्दी-अनुवाद सेहो कयलनि, परंच ओकर आब इतिहासेमे उल्लेख भेटैछ। मंचित भेने चर्चामे रहि गेल परंच ओकर मूल वा प्रतिलिपि सम्प्रति अप्राप्य अछि। मैथिली-अनुवाद मात्र प्रकाशित भेल अछि।

दूतांगद व्यायोग

नाट्य-शास्त्रक अनुसार 'लोकानुवृत्तं नाट्यम्' लोक-जीवनक अनुकृति जे अलौकिक रसानन्द प्रदान करैछ, रूप, वेश-भूषा, उक्तिसँ तथा मनोभावक स्वाभाविक स्वतःप्रादुर्भूत स्वेद-कम्प आदिक चेष्टाक समन्वयसँ दर्शकवृन्दकेँ परितृप्त करैछ ओ रूपक कहल जाइछ। तकर नाटक-प्रकरण आदि दस भेद कहल गेल अछि। धनंजय आदि आचार्य द्वारा 'दशरूपक'क निरूपण करैत ओहिमे 'नाटकमथ प्रकरणं भाण-व्यायोग समवकार डिमाः। ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रहसनमिति रूपकाणि दश।' रस, नायक एवं कथा-आख्यानक भेदसँ सभकेँ फुटकाओल गेल अछि। पाछाँ ओकर नाटिका आदिसँ अठारह गोट और भेद-विस्तार कयल गेल। यदनुसार भारतीय भाषा-साहित्यमे विशेषतः संस्कृत वाङ्मयमे ओकर विस्तार होइत गेल। साहित्यदर्पण प्रभृति ग्रन्थमे एकर उदाहरण समेत विस्तृत विवरण अछि।

व्यायोगमे कथानक ख्यातवृत्त इतिहास-पुराण प्रसिद्ध होयबाक थिक। रस उद्धत अर्थात् वीर-रौद्र आदि उत्तेजक स्थायी भाव मूलक रहबाक थिक। स्वभावतः स्त्रीपात्रक समावेश अत्यल्प, अंक एक, मात्र एक दिनक घटनामूलक रहबाक थिक। एहि सभ दृष्टिएँ संस्कृतमे सुभट नामक कविक रचना 'दूताङ्गद' नामसँ सेहो उपलब्ध अछि। मुन्शीजी सेहो 'दूतांगद व्यायोग'क रचना कयलाँने, परंच ई ओकर अनुवाद नहि थिक। मूल घटना मात्र एक अछि, तकर कारणो छैक। अंगदक दौत्य रामायणमे सर्वाधिक आकर्षक अछि, जाहि कोनो भाषामे अंगद-रावण संवाद आयल अछि ओ विशेष लोकप्रियता प्राप्त कयलक। खासकऽ चन्दाझाक मैथिली रामायणमे एहि प्रसंगक लोकप्रियता बहुत मान्य अछि। मुन्शीजी एहि कथानककेँ अपना ढंगसँ व्यायोगक रूप देलनि जे बहुत सफल मानल गेल अछि।

अंगदक यात्रा–संकल्पहिसँ ओज एवं दौत्यकर्मक दुर्दमता स्फुट होइछ :–

जाए गढ़लंकामे नशङ्क हम रावणकाँ
प्रभुक समाद सब शुद्ध-शुद्ध कहबे,
सामपथ-पथिक लंकेश-हिम देखिकै

कुशल मन मानि हम शान्तचित्त रहबे ।
मानि प्रभुवचनसँ संग लय जानकी
मिलन मति जानि मन मित्रभाव गहबे,
बात विपरीत जौं सुनब निज कान सौं
शपथ कै कहिअ हम एक नहि सहबे ।।

एही भावावेशसँ जखन लंका-द्वारपर अंगद पहुँचैत छथि तखन हुनक मनोभाव कविक एहि पंक्ति द्वारा सुव्यक्त होइछ :–

यैह लंका गढ़ थीक रावण राजधानी,
एही गढ़मे शोक-युता सीता महरानी ।
यैह द्वार थिक जै लंकिनीकेँ कपि ताड़ल,
यैह नगर हनुमान पुच्छ–अनलहिसौँ जारल ।।
आब हमहुँ जाइ छी नृपति-सभा देखबे करब,
उचित अपन कर्तव्यसौँ कोठिहु हम नहिए टरब ।।

परिचय संवादक प्रसंग जखन रावणक दर्प-वाणी अंगद सुनैत छथि जे :–

रावण–अरे वैह राम–

वन-वन विचरथि विपतिग्रस्त गृह-गृहणी अपन गमौने ।
वानर संगहि काल बिताबथि दीन दशाकेँ पौने ।

तखन अंगद परिचय सगर्व सुनबैत छथि :–

भूमण्डल भूपाल गर्व-हर शिवधनु तोड़ल,
परशुराम सन वीर हारि जनिकाँ कर जोड़ल ।
कौशिक मख रछपाल मारि मारीच खसाओल,
खर दूषण त्रिशिरा विनाशि मुनिवृन्द बसाओल ।
एकहि शरसँ वालिकाँ देल वास सुरधाम जे ।
उदधि सेतु रचित सैन युत आयल छथि श्रीराम से ।।

एहि तरहेँ अंगदक दौत्य अन्तमे चरण-चापक लीलापूर्वक रावण-गर्व भंजनक संग पुनः श्रीरामक ओतय प्रत्यागमन करैत निम्नांकित सन्देश–वाक्यमे परिणत होइछ :–

की करीलमे पत्र पात ऋतुराजहु देखिअ,
सिकतासँ मथि तेल लाभ करबो वा लेखिअ ।
की कुपुत्र तौँ केओ कुलक मर्यादा राखल,

नीम रोपि की केओ कतहु दाडिम फल चाखल ।।
यत्न अनेकहु बीज वपि ऊसरमे केओ फल लहै ।
नीतिकथा नहि श्रवणधर जे अनीतिगामी रहै ।।

पुनः एकहि छन्दमे अपन दौत्य क्रियाकलापक वर्णन करैत दूतांगद अपन कृतकृत्यता प्रदर्शित करैत कहैत छथि :–

कहल समाद शान्त भावहि हम प्रभु-अनुशासन देल सुनाय ।
मानल नहि मनमे रिस ठानल, काल-ग्रसित की औषध खाय ?
तखन हमहु पद रोपि प्रणहिसौँ सभा सभ्यकेँ देल सुनाय ।
अपने चलल, कहल प्रभुपद गहु सुनितहि फिरले अधिक लजाय ।।

एहि तरहेँ ओजस्वितापूर्ण रामदूत अंगदक शौर्यपूर्ण क्रियाकलापसँ ई व्यायोग मौथिली साहित्यमे एहि एकांकी आयोग रूपकक सफलता सिद्ध-प्रसिद्ध अछि । मुन्शीजीक नाट्यशास्त्रीय ज्ञान ओ तकर उपयुक्त प्रयोगक ई एक गोट सफल उपादान थिक । एहि रौद्र-उद्धत रचनामे स्त्री-पात्रक विरलता रहबाक विधान अछि तेँ लेखक स्त्री-पात्र तँ नहिए प्रस्ताविकहुमे सूत्रधारक संग नटीक प्रवेश नहि कराय नट-सहचर परिपार्श्वककेँ उपस्थित करौने छथि एवं औद्धत्यक परिपाक रामविजयक परिणामक शुभकामना देश-हितमे भावी लंकेश विभीषणक मुहेँ करौने छथि :–

यज्ञधूम भुवि नभधरि पसरौ विप्र वेद कर मान ।
बरिसौ वारिद, शस्य-वृद्धि हो नृपति नीतिरत ज्ञान ।।
जोड़ि युगल कर नतशिर भै कहु वर माङब की आन ?
रघुनन्दन-सीता पद-पंकज बनल रहौ नित ध्यान ।।

उत्तर रामचरित (अनुवाद)

मैथिलीभाषामे सर्वाधिक अनुवाद संस्कृतसँ भेल अछि। कारणो स्पष्ट अछि, मिथिला मूलतः संस्कृत विद्या ओ भाषाक उपासना-स्थल रहल अछि । जखन 'आशूद्रान्तं कवीनां' वचन-रचनाकेँ समाजोन्मुखी करबाक भेलैक तखन ओकर भाषान्तर नाटकक गीत-रचनामे होइत गेलैक । मध्यकालीन मिथिलाक नाटकमे ई प्रवृत्ति प्रचुर रूपेँ प्राप्त होइछ । पाछाँ कथोपकथनमे प्रयुक्त गद्यहुक अनुवाद होअय लागल जे भारतक पूर्वांचलमे प्रचलित अंकीया नाट सभमे प्रदर्शित अछि । तदुत्तर जखन अठारहम शताब्दीक अन्तक उपरान्त उनैसम शताब्दीक आरम्भसँ वैदेशिक प्रभाव–विस्तारक बाद शिक्षा और साहित्यमे लोकप्रवृत्तिक प्रवर्तना भेल, तखन धार्मिक एवं नैतिक कथा–आख्यायिका संग रसात्मक

साहित्यहुक अनुवाद दिस प्रवृत्ति बढ़ल । हितोपदेश-पुरुषपरीक्षाक संग धर्मिक व्रत-कथा आदि अपन भाषामे रूपान्तरित होअय लागल ।

क्रमशः रस-साहित्यक अनुवादक क्रममे नाटक दिस प्रवृत्ति बढ़ल । संस्कृतमे कालिदास, भवभूति, विशाखदत्त प्रभृति नाटककारक रचनाक अनुवादक क्रममे मुन्शीजी 'उत्तरे रामचरिते भवभूति विशिष्यते' एहि उक्तिक अनुगमेँ उत्तरचरितक अनुवाद प्रारम्भ कयलनि ।

'उत्तर रामचरित' नाटकक अनुवाद मिथिला नाटकक रचनासँ यशस्विता प्राप्त कयलाक बाद ओ कयलनि, से हुनक नाटकीय प्रस्तावनामे स्पष्ट अछि–

''की ई रघुननदन सैह ने थिकाह जनिक रचित मिथिला-नाटकक अभिनय सर्वत्र होइछ ।''

ई अनुवाद १९१२ ई. मे सम्पन्न भेल छल आ एकर प्रेरक-प्रोत्साहक स्व. गणनाथ झा छलथिन जनिके ई ग्रन्थ समर्पित करैत लिखने छथि–''मिथिलाभाषा मध्य इहो 'उत्तररामचरित' नाटकक अनुवाद अपनहिक उत्तेजना तथा उत्साहेँ हम लिखल अछि,– तेँ त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पितम् ।''

एहि ग्रन्थपर सम्मति प्रकट करैत 'पारिजातहरण' नाटकक प्रथम सम्पादक–प्रकाशक एवं 'मुद्राराक्षस'क प्रथम अनुवादक पं. चेतनाथझा सम्बन्ध कारकक 'केर' वा 'क' विभक्तिक प्रसंग हिनका लिखने छथि....

''केर यद्यपि प्राचीनो गीत मध्य छैक परंच सम्प्रति लोक 'क' साधुभाषा मानै अछि... 'केर' ग्राम्य भाषा बुझै अछि । परंच भाषाक संस्कारक अहींलोकनि छी । यदि अहाँलोकनि 'केर' पसिन्न करी तँ हमरहु अनुवाद मध्य सुभीता हो । 'मुद्राराक्षस'क अनुवाद करबा मध्य 'केर' परित्यागसँ बहुत क्लेश भेल ।''

एहिसँ स्पष्ट होइछ, तत्कालीन लेखकवर्ग द्वारा मुन्शीजी भाषाक संस्कार प्रवर्तक रूपमे मान्य भऽ गेल छलाह ।

उत्तरचरितक अनुवादमे 'ऋषीणा पुनराद्यानां वाच-मर्थोऽनुधावति' पद्यक अनुवादक प्रशस्तता द्रष्टव्य.....

लौकिक साधु विचारि अर्थ मन पाछाँ शब्द उचारथि ।
मुनि त्रिकालदर्शी जे भाषथि अर्थ ताहि पथ धाबथि ।।

'परमसह्यस्तु विरहः' केर भाषान्तर :–

ई थिकी गृह-श्री हमर, नथनहु सुधांजन रूप ।
अंग परसहि बुझी चानन लेप बहुल स्वरूप ।।
शीत मोतिम माल सन ई बाहु प्रिय संयोग ।
हिनक प्रिय अछि की न, केवल एक असह वियोग ।।

महाकाव्य

मुन्शी रघुनन्दनदासक सर्वाधिक ख्याति हुनक सुभद्राहरण महाकाव्य रचनासँ अछि। रचनाक वैशिष्ट्यक संग महत्त्व एहू कारणेँ विशेष अछि जे हिनकासँ पूर्व महाकाव्यक रचनामे दोसर केओ साहित्यसेवी प्रवृत्त नहि भेल छलाह। ओना, रामायाणो महाकाव्य कहि प्रसिद्ध अछि, परंच महाकाव्य रूढ रूपेँ सर्गबद्ध प्रबन्ध-काव्य जे आलंकारिक शैलीमे लिखल जाइत छल, अश्वघोष–कालिदास–भारवि–माघ–श्रीहर्ष आदि जाहि महाकाव्य परम्पराक प्रर्वतक भेलाह–जकर लक्षण भामह–उद्भट–दण्डी–वामन मम्मट–विश्वनाथ प्रभृति अलंकारशास्त्रप्रणेता लक्षण द्वारा विशष्ट शैलीक रचनाकेँ महाकाव्यक अभिधान देलनि, ओकर रचना हिनकासँ पूर्व नहि कयल गेल छल। यद्यपि एकर पुस्तकाकार प्रकाशन १९६० मे भेल तथा धारावाही रूपेँ प्रकाशन मिथिलामिहिर (दरभंगा) दू दशक पूर्वहि प्रारम्भ भेल छल तथा एकर रचना १९३३ मे प्रारम्भ भेल ओ १९३८ मे समाप्त कयलनि, परंच जहिना हिनक मिथिला नाटक १९१५ मे मंचगत होइतहु १८ वर्ष बाद १९३२मे प्रकाशित भेल तहिना सन् ३८ मे समाप्त होइतहुँ दू दशकक अनन्तर १९६० मे एकर प्रकाशन भऽ सकल। एहि बीच कविशेखर बदरीनाथझाक महाकाव्य प्रकाशित कयल जा चुकल। किन्तु रचनाकालक दृष्टिएँ सुभद्राहरणेँ प्रथम मैथिली महाकाव्य थिक।

मैथिलीक प्रसिद्ध साहित्यकार विद्वान् कुमार गंगानन्द सिंह एहि तारतम्यकेँ स्पष्ट करैत लिखलनि जे "मैथिली साहित्यक लब्धप्रतिष्ठ वयोवृद्ध साहित्यकार स्व. मुन्शी रघुनन्दन दासज़ी 'सुभद्राहरण'क रचना कय मैथिली साहित्यकेँ प्रथम महाकाव्य प्रदान कयलनि अछि। मैथिलीमे गीति एवं नाट्य-साहित्यक परम्परा तँ अतिप्राचीन कालसँ आबि रहल अछि, किन्तु अद्यावधि एहि भाषामे हिनकासँ पूर्व केओ महाकाव्य रचना नहि कयने छलाह।"

मर्मज्ञ विद्वान् पं. त्रिलोकनाथ मिश्र साक्ष्य प्रस्तुत करैत छथि जे "दरभंगा–मण्डलकेर सखबाड़-ग्रामवासी साहित्य रत्नाकर स्वर्गीय मुन्शी रघुनन्दनदासजीक सुभद्राहरण महाकाव्यक बारहम सर्गक प्रारम्भिक अंश सुनवाक अवसर मैथिली साहित्य परिषदक

मुजफ्फरपुर–अधिवेशनमे भेल छल ।'' ई अधिवेशन १९३६ मे आयोजित छल । १३ सर्गक एहि महाकाव्यक उपान्त सर्गक श्रवणसँ स्पष्ट अछि जे ई तखन समाप्तप्राय छल । द्वितीय मैथिली महाकाव्य 'एकावलीपरिणय'क 'मैथिली-साहित्य पत्र'मे क्रमिक प्रकाशन प्रारम्भ भेल छल । यद्यपि एकावली–परिणयकारक ई कथन स्पष्ट संकेत कयने अछि जे :–

ई मार्ग विषम अछि निराधार ।
छी हमहुँ अपरिचित चलनिहार ।।

से पूर्व सुभद्राहरण काव्यक प्रकाशन नहि भऽ सकने महाकाव्यक रचनाक पथ प्रशस्त नहि भऽ सकल छल । अएव ओहो अपन नव पथकेँ प्रशस्त करवामे स्वतः प्रवर्तमान भेल छल । अतएव एकर प्राथम्यमे कोनो अन्तर नहि पड़ैछ । वंगीय भाषाशास्त्रीय प्रसिद्ध विद्वान् सुकुमारसेन अपन उद्‌गार व्यक्त कयने छथि ''रघुनन्दनदास महाशय आधुनिक मैथिलीभाषा मे प्रथम उकृष्ट नाटक एवं महाकाव्य लिखे गौरव अर्जन करे पावेन ।'' कविक उक्ति उचिते अछि :–

धयल हम विनु पथप्रदर्शक गमन मार्ग दुरंत ।
मैथिली कविताक कुंजहि महाकाव्यक पंथ ।।

महाकाव्य आदिक लक्षण-निरूपण संस्कृत साहित्यशास्त्रमे उपलब्ध अछि । भारतीय भाषा सबहुमे यदि पाछाँ कतहु चर्चितो भेल तँ ओकर आधार मूल संस्कृते रहल ।

अग्निपुराणक ३३७म अध्यायमे, दण्डी काव्यादर्शक प्रथम परिच्छेद एवं भामह–उद्‌भट प्रभृति चिरन्तन अलंकारकार अपन काव्य–प्रभेदक प्रसंगमे महाकाव्यादिक निरूपण कयने छथि । एहिसँ पूर्व महाकाव्य यौगिक शब्द छल जे काव्यक महत्ता ओकर विपुलाकृति ओ प्रभावविस्तारक कारण रामायण हो वा महाभारत वृहत्कथा वा आख्यानकाव्य जे हो 'आकार-सदृशप्रज्ञः' भेलापर ओ महाकाव्यक अभिधान ग्रहण कय लैत छल । किन्तु बादमे आबि कय जखन काव्यक स्वरूप निर्धारित होमय लागल, ओकर भेद-प्रभेदक संश्लेषण-विश्लेषण होमय लगलैक तँ महाकवि लोकनिक महान् काव्यकेँ लक्ष्य राखिए कय ओहिसँ लक्षण निर्धारित भेल ओ तदनुकूल आगाँसँ निर्धारित रूप–रेखाक भित्तिए पर महाकाव्यक रचना होमय लागय । पहिने कोनो नायकविशेषकेँ अवलम्बन बनाय काव्य लिखल जाइत छल तँ 'एकनायक' लक्षण बनल, परंच जखन रघुवंश सदृश वंशानुचरित काव्यक निर्माण भय गेल ओ सहृदय समाजमे पूर्ण समादृत सेहो भेल तखन तदनुसारो लक्षण निर्धारित भेल– 'अथवा बहुनायकम्' । द्वितीय वस्तु अंगीरसक निर्धारणमे पहिने शृंगार अथवा वीरकेँ काव्यमे आद्यन्तव्यापी देखल तँ 'शृंगारो वीर एव वा' गाह्य मानल गेल । परंच जखन 'बुद्धचरित' आदि समक्ष आयल तखन शान्तरस सेहो अंगी रूपमे

गृहीत होमय लागल । भवभूतिक उद्घोषसँ करुण रसकेँ से हो अंगित्व देब ग्राह्य होमय लागल । एहि सभ ऊहापोहसँ जे लक्षण आचार्य लोकनि निर्धारित कयलनि वैह महाकाव्यक मापदण्ड बनि गेल । महाकाव्यक प्रचलित लक्षणमे अग्निपुराणक, दण्डीक ओ दर्पणक रीतिकेँ कविसमाजमे विशेष आदर भेटलैक :–

सर्गबन्धो महाकाव्यमारब्धं संस्कृतेन यत् ।
तादात्म्यमजहत्तत्र तत्समं नातिदुष्यति ।।
इतिहासकथोद्भूतमितरद्वा सदाश्रयम् ।
मन्त्रदूत-प्रयाणाजिनियतं नातिविस्तरम् ।।
शक्वर्यातिजगत्यातिशक्वर्या त्रिष्टुभा तथा ।
पुष्पिताग्रादिभिर्वक्राभिजनैश्चारुभिः समैः ।।
मुक्ता तु भिन्नवृत्तान्ता नातिसंक्षिप्तसर्गकम् ।
अतिशक्वरिकाष्टम्यामेकसंकीर्णकैः परः ।।
मात्रयाप्यपरः सर्गः प्राशस्त्येषु च पश्चिमः ।
कल्पो तिनिन्दितस्तस्मिन् विशेषानादरः सताम् ।।
नगराणर्वशैलर्तुचन्द्राकश्रिमपादपैः ।
उद्यानसलिलक्रीडा-मधुपान-रतोत्सवैः ।।
दूतीवचनविन्यासैरसतीचरितादभुतैः ।
तमसा मरुताप्यन्यै र्विभविरतिनभैरिः ।।
सर्ववृत्तिप्रवृत्तं च सर्वभावप्रभावितम् ।
सर्वरीतिरसैः स्पृष्टं पुष्टं गुण-विभूषणैः ।।
अतएव महाकाव्यं तत्कर्ता च महाकविः ।
वाग्वैदग्ध्यप्रधानेपि रस एवात्रजीवितम् ।।
पृथक् प्रयत्नं निर्वर्त्य वाग्विक्रमरसाद् वपुः ।
चतुवर्गफलं विश्वव्याख्यातं नायकाख्यया ।।''

एहि अग्निपुराणीय लक्षणमे 'संस्कृतेन आरब्धं' रामायणादि किछु ग्रन्थकेँ छोड़ि अन्यत्र भाषाकाव्यमे निर्वाहित नहि भय सकल । ऐतिहासिक कथानकक संग-संग सदाश्रित अवदातचरित नायकाश्रित चरित्र-चित्रण अवश्य गृहीत होइत रहल, किन्तु शक्वरी-पुष्पिताग्रादि छन्दक परिगणन आगाँ अनिवार्य नहि रहल । अन्तमे वृत्त-छन्दक प्रयोग तँ रहल, किन्तु तकर निर्वाह कतहु नहिओ कयल गेल । प्रकृतिवर्णन जहाँ धरि सम्भव निर्देशानुसार होइत रहल । ब्रह्म तप-तपोवन द्यूत-मृगया आहार-विहार आदि एवं सामाजिक आचार-विचारादिक चर्चा चलैत रहल । प्रकृति-वर्णनक क्रममे शीतातपवर्षादिक

ऋतुचक्र, अहोरात्रक कालचक्र, गिरि-नदी, मरु-जंगल, भूमि-सागर, वन-उपवन, तरु-लता, पुष्प-पत्र दिशाकाश आदिक यथासम्भव वर्णन बरोबरि होइत रहल। सज्जन-दुर्जनक वन्दा-निन्दा प्रसंगानुसारी चलैत रहल। चतुर्वर्ग-धर्मार्थकाममोक्षक साधना लक्ष्य रहल। वाग्विदग्धता अर्थात् सूक्तियोग, अलंकार प्रयोग योजनीय रहल। सर्वाधिक उपर्युक्त लक्षणमे मान्यता अछि एहि मूल वस्तुक जाहिमे कहल गेल जे एहिमे वृत्त छन्द घटना सभ समन्वित हो, सब भाव–देवादिरतिविषयक अथवा मनोविकार–सर्वसंवेद्य चित्त-वृत्ति निरूपित हो। अंगांगिभावसँ सब रस, सब गुण-विभूषण (अलंकार)क निवेश-प्रवेश हो। अर्थात् काव्यतत्त्व समग्र रूपेँ जतय निवेशित हो, व्यक्ति-समाजक स्वभाव-प्रभाव प्रदर्शित हो, अपना युगक, देश-समाजक यावतो रुचिप्रवृत्ति चित्रित हो, तखनहि ओ महाकाव्य, तखनहि ओकर रचयिता महाकवि।

आगाँ दण्डीक लक्षण किछु और अनुभव समेटि-बटोरि महाकाव्यक लक्षण-दिशा निर्धारित कयलक। काव्यादर्शक अभिमतेँ कथानक, चरित्र, रस ओ परिवेश अनिवार्य तत्त्व थिक। प्रकृति-वर्णन, व्यक्ति-समाजक आचार-विचार, आहार-व्यवहारकेँ सहकार्य तत्त्व मानैत कतोक पूर्वोक्त लक्षणकेँ ओ छाँटि देलनि। छन्द सम्बन्धी बाध्यता नहि। मुख्य भाषा संस्कृते रहय सेहो अनिवार्य नहि। किन्तु एकर परिधिक व्यापकताकेँ एवं वर्णनीय वस्तुक स्थायित्व ओ ध्येय मानलनि। आरम्भमे आशीर्नमस्क्रिया तँ पहिनहु छल किन्तु वस्तुनिर्देशोकेँ ओ मांगलिक स्थानीय मानलनि।

विश्वनाथक समय धरि महाकाव्यमे किछु औरो परिवर्तन अयलैक जकर सन्निवेश अपन लक्षणमे ओ कयलनि। ओहि समयमे संस्कृतमहाकाव्यक अनुकल्पे प्राकृत ओ अपभ्रंशमे महाकाव्यक रचना होमय लगलैक। दण्डीक समय महाकाव्यक नाम नायकसँ सम्बद्ध रहैत छलैक ताहिमे ई छूट देलनि–'नायकस्येतरस्य वा'। सर्गहुक नामविधानक संकेत देलनि जे उपादेय कथापर आश्रित हो, भाषानुसार आर्षमे आख्यान, प्राकृत काव्यमे आश्वास, अपभ्रंशमे कुडवक। तहिना छन्दविधानमे इहो कहलनि जे 'तथापभ्रंशयोग्यानि छन्दांसि विविधान्यपि।' हुनक काव्यलक्षणक कारिकामे नायक, रस, वृत्त, छन्द एवं तन्त्र अनिवार्य विषयक निरूपण निम्नांकित अछि :–

सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः।
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोपि च॥
शृंगारवीरशान्तानामेकोङ्गी रस इष्यते।
अंगानि सर्वेपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः॥
इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम्।
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत्॥
आदौ नमस्क्रिया वापि वस्तुनिर्देश एव वा।

क्वचिन्निन्दा खलादीनां सतां च गुणकीर्तनम् ।।
एकवृत्तमयैः पद्यैस्त्ववसाने न्यवृत्तकैः ।
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह ।।
नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन् दृश्यते ।
सर्गान्ते भावि सर्गस्य कथयाः सूचनं भवेत् ।।
सन्ध्या सूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः ।
प्रातर्मध्याह्न-मृगया-शौलर्तुवनसागराः ।।
संभोग-विप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ।
रणप्रयाणोपयम-मन्त्रपुत्रोदयादयः ।।
वर्णनीया यथायोगं सांगोपांगा अमी इह ।
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा ।।
नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्गनाम तु ।
अस्मिन्नार्षे पुनः सर्गाज्ञवन्त्याख्यानसंज्ञकाः ।।
प्राकृतैनिर्मिते तस्मिन् सर्गा आश्वाससंज्ञकाः ।
छन्दसा स्कन्धकेनैतत् क्वचिद् गलितकैरपि ।।
अपभ्रंश निबद्धेस्मिन् सर्गाः कुडवकाभिधाः ।
तथापभ्रंशयोग्यानिच्छन्दांसि विविधान्यपि ।।

एहि सभ लक्षणकेँ समन्वित कयलापर ई स्पष्ट अछि जे जहिना लक्षणानुगमन करितहुँ, प्राकृत, अपभ्रंश आदिक महाकाव्यमे किछु-ने-किछु विशेषता, अपन समयक, परिवेशक, प्रचलित छन्द-बन्धक ओ लोकचरित्रक सामयिकतासँ किछु भेद होइत गेलैक तहिना आधुनिक भारतीय भाषा मध्य किछु-ने-किछु वैचित्र्य, किछु-ने-किछु विशिष्टता सेहो अबैत गेलैक ।

प्रथम महाकाव्य-रचयिता रूपमे प्रसिद्धिप्राप्त मुन्शीजीक 'सुभद्राहरण' महाकाव्य अलंकारग्रन्थक रीतिसँ अनुबद्ध अछि । एहि लक्षणक अनुसार महाकाव्य सर्गबन्ध होयबाक चाही । सर्गसंख्या न्युनातिन्यून आठसँ ऊपर रहबाक थिक, सामान्यतः महाकाव्य दशांक सँ उपरे देखल जाइछ । कथावस्तु प्रसिद्ध इतिहास-पुराणमूलक प्रख्यात हो । नायक धीरोदात्त प्रकृतिक होथि, नायिका उदात्त-स्वभावा स्वकीया, अंगीरस मुख्यतः शृंगार-वीर हो, आन सभ रसक अंग रूपेँ निवेश हो । प्राकृतिक वर्णन यथाप्रसंग कयल जाय, छबो ऋतु, सन्ध्या प्रभात चन्द्र-चन्द्रिका, सूर्यातप सागर-पर्वत वन-वाटिका सभक प्रसंगागत वर्णन हो, धर्मार्थकाममोक्ष चतुर्वर्गक समावेश, नीति-रीति यावतो व्यक्ति-समाज शील स्वभाव अर्थात् लोकजीवन एवं देशकोशक, समय-परिस्थितिक परिज्ञान सर्वांगपूर्ण महाकाव्यकेँ होयबाक थिक । सर्ग-सर्गमे विभिन्न छन्द, सर्गान्तमे छन्दभेद ओ कोनो सर्गमे विविध छन्दक निवेश-प्रवेश आदि महाकाव्यक लक्षणमे निर्देशित अछि ।

एकर पूर्णरूपेँ प्रयोग संस्कृत महाकाव्यमे बुद्धचरित, रघुवंश, कुमारसम्भव, किरातार्जुनीय, नैषधीयचरित, हरविजय आदि अनेकानेक रचनामे सुसंगत अछि । तदुत्तरकालीन भाषा सबहुमे सेहो एकर अनुकरण होइत आयल अछि, यथासम्भव एहि सब लक्षणक समावेश चलैत रहल अछि । मैथिलीमे एकर विधिवत् समारम्भ करबाक श्रेय मुन्शीजीकेँ प्राप्त भेलनि जाहिसँ 'मैथिलीसाहित्यरत्नाकर' रूपमे ओ मान्य बनल छथि ।

सुभद्राहरण प्रकाशनक तिथिएँ द्वितीय, किन्तु रचनात्मक निर्माणक दृष्टिएँ प्रथम लाक्षणिक महाकाव्य थिक, जाहिमे संस्कृतसाहित्यशास्त्रानुसार लक्षण समन्वित अछि । ई सर्गवन्ध महाकाव्य तेरह सर्गमे विभाजित अछि । कथावस्तु महाभारतक आदिपर्वसँ लेल गेल अछि । जकरा अपन कल्पनानुरूप रोचक प्रसंगसँ सुसंगत रूप कवि प्रस्तुत कयने छथि । नायक छथि मध्यम पाण्डव अर्जुन, जे नायकोचित गुणसँ सर्वथा समन्वित छथि । हिनकामे लक्षणोक्त गुण गुम्फित अछि । 'सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्तगुणान्वितः' । रचनाक्रममे–'एकवृत्तमयैः पद्यैरवसाने न्यवृत्तकैः । नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह ।।' एकर नीक जकाँ परिपालन कयल गेल अछि ।

लक्षणग्रन्थक अतिरिक्त लक्ष्यग्रन्थहुक परिपाटीकेँ मुन्शीजी अपन काव्यमे अनुवर्तित कयलनि । प्रसिद्ध शिशुपालवध महाकाव्य 'श्रयङ्क' कहबैछ, प्रत्येक सर्गक अन्तमे 'श्री' शब्दक निवेश अछि । जेना कोनो मुद्रासँ मुद्रित वस्तुक अभिज्ञान होइछ तहिना एहि प्रकारक शब्दाङ्कसँ । माघक पूर्ववर्ती भारवि अपन महाकाव्य किरातार्जुनीयक सर्गान्तमे लक्ष्मी पद अंकित कयने छथि तेँ ओ 'लक्ष्म्यङ्क' कहल जाइछ । मुन्शीजी अपन 'सुभद्राहरण'क सर्गारम्भ श्री सँ और समाप्ति कृष्णसँ कय रचनाकेँ शक्ति-शक्तिमानक प्रतीक श्रीकृष्ण-नामांकित कयलनि अछि जे सर्वथा सांस्कृतिक परम्परा थिक ।

भारतीय काव्य-महाकाव्य उपजीव्य संस्कृतमय रामायण-महाभारतक मन्त्रद्रष्टा ऋषि वाल्मीकि ओ महामुनि व्यासकेँ श्रद्धा निवेदन करैत मुन्शीजी संस्कृतक प्रति सहजहि नत-प्रणत छथि :–

व्यास वाल्मीकिहु मनाबी सूक्ति अनुमति देथि ।
जनिक काव्यक कोष धनसँ कीर्ति कवि जग लेथि ।।

संस्कृत साहित्यशास्त्रक एक रूढ़ नामे थिक अलंकारशास्त्र, अलंकार शोभाधायक पद-विच्छित्तिक नामेँ प्रचलित अछि । ओ शब्दगत धमकादि, अर्थगत उपमा रूपक उत्प्रेक्षा अशियोक्ति प्रभृति एवं शब्दार्थगत श्लेष । एवंप्रक्रमे अलंकार विभाजन प्रसिद्ध अछि । हिनक एकटा उदाहरण एतय देल जाइछ :–

परसन मन रहि पर सन भै रहु परसन हा ।
दरसन छुटहत हिय गति होयत दर सन हा ।

बरस नयन युग अनुखन पावस वरसन हा ।
तरस न छुट हिय पिय किए भेलहुँ इतर सन हा ।।
भेलि कंक कंकन कर विगलित गलित ललित तसु गाव ।
छलि प्रमुदित सुखलहि सुख सनि कैल विरह उत्पात ।।
बचन सरस सुनि शर सन लागै मिलन मिल न अब कंत ।
कानय कान धरय नहि हित बच बचत न जीवन तंत ।।

एहिमे प्रसंग तँ अछि प्रवत्स्यत्पतिका चित्रांगदाक भावि विरहक आवेग-वर्णनक, चमत्कार भरि देने अछि स्वरव्यंजन-संहतिक आवृत्तिमूलक यमक ।

अर्थालंकारमे छोटछीन रूपक, यौवनमे सतरंजक आरोप-मूलक चमत्कार एहि लेल जे सतरंज ओ कथा-गल्प, एकर खेल ओ साहित्यमे आविष्कारक थिक प्राचीन भारत । चतुरंगिणी सतरंज, तकरा यौवनक संग अभिन्न कय, चतुर नायक चतुरा अंगिनीक संग खेड़ि करैत मातु मानि लैछ–

यौवनक सतरंज रत रहु पुरुष नारि खेलाड़ि ।
मन महीपतिकेँ कटाक्षक तुरग सह देल नारि ।।
बुद्धि धृति किश्ती पदातिक चालि व्यर्थ बिचारि ।
युक्ति यतनहु भेल त्राण ने मातु मानल हारि ।।

कालिदासक शकुन्तलाक विषयमे कहल जाइछ :–

कव्येषु नाटकं रम्यं तत्रापि च शकुंतला ।
तत्रापि च चतुर्थोङ्कः, तत्र श्लोकचतुष्टयम् ।

ओही चतुर्थ अंकक चारि श्लोकमे अन्यतम निम्न पद्य अछि जे पतिगृह गमन काल शकुन्तलाकेँ गृहपति महर्षि कण्व एकहि श्लोकमे यावतो कन्योचित उपदेश दैत छथि :–

शुश्रुषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने ।
पत्युर्विप्रकृतापि रोषणतया मास्म प्रतीपं गमः ।।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी ।
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो, वामाः कुलस्याधयः ।।

एकरे अनुगमन करैत 'सुभद्राहरण' महाकाव्यमे देवकी-मुखेँ सुभद्राक सासुर जयबाक अवसरपर उपदेश देल गेल अछि जे सर्वथा भावित प्रभावित ओ विस्तारित अछि :–

सोचि जग युवतीक गति लखि धैर्य हियमे धैलि ।
से विविध उपदेश अनुपम भद्रिकाकेँ कैलि ।।
कहलि तिय तन पाबि जग मे यैह जानब नीति ।
भए सुहागिनि जाइ सासुर सिखी पतिकुल रीति ।।
श्वशुर गृह कुलवधुक हित थिक अपर जन्म स्वरूप ।
छुट पिता कुल रीति हो पति कुलकहिँक अनुरूप ।।
सवधानहिँ चलब बाजब, काज मे मन दीअ ।
पद कुपथ बच कुवच हो नहिँ धाख राखब हीअ ।।
दन्तपंक्तिक बीच रसना करै निस-दिन वास ।
दाँत सौँ पवितहुँ दुखो, रह दुखी दाँतक पास ।।
कुलजनक कटुवचन तहिना सहब नीकक आश ।
प्रेम सेवा निरत रहि नित करब सासुर वास ।।
श्वशुर पिताकेँ मानि सासुकेँ माता मानव ।
पतिक सहोदर भाइ, तनिक तिय भगिनी जानब ।।
सौतिनि संगिनि ननदि सखी मानव परिवारे ।
सभक संग सभ समय सरल राखब व्यवहारे ।।
पतिकेँ मानब देवता, प्रेम सहित सेवा करब ।
एहिलौकिक पारलौकिको गहन गहन सुख सौँ बरब ।।
गृहिणी भय गृहकार्य कुशलता
सभ खन मन मे लाबी ।
पाक पटल पटुता पौनहि पर
परहुँ प्रशंसा पाबी ।।
पर परिहन रचना शुचि नव नव
कला कुशल दरसाबी ।
पावी पति-घर परम प्रतिष्ठा
प्रीति रीति अपनाबी ।।
प्रपा रूपहिँ तृषावंतहिँ करब जीवन दान ।
अन्नपूर्णा सदृश क्षुधितक हेतु अन्न प्रदान ।।
रोग-पीड़ित जनक सेवा रूप निशि दिन ठाढ़ ।
दीन दुखिया दुख हरणमे निरत प्रेम प्रगाढ़ ।।
रौद दग्धक हेतु छाया श्रान्त व्यजन समान ।
आर्त हित आश्वासवाणी, शत्रु चण्डी जान ।।

सतत चित्त उदार राखब वचन मधुसन मान ।
गृही हेतुक शत्रु लक्ष्मी बनि करब कल्याण ।।

कालिदासक काव्य-सूत्रक केहन सुन्दर सुविस्तृत भाष्य रूपमे ई रचना अछि । कालिदासीय भाव भावित रहितहुँ मैथिलीक कुशलाकाव्यशिल्पी मुन्शीजी तेहन ने एहिमे ममता–मर्यादा सभ्यता-संस्कृति भरि देने छथि जे ई भाव ग्रहण भावक विस्तारीकरण भय गेल अछि ।

एहि प्रसंग लेल यदि कविकुलगुरु कालिदास वन्द्य तँ मैथिलीसाहित्यक रत्नाकर मुन्शीजी सेहो अभिनन्द्य ।

सासुरकेँ नैहर बनायब, सासुरक लोककेँ रौददग्ध लोककेँ जेना छाया शीतकर, आर्तकेँ आश्वासन कथा जेना प्रीतिकर, तहिना कुलवधू प्रतीत होथि एकर नीति-रीति नव्य-भव्य अछि । नैहरक स्नेहमय कोमल वातावरणसँ सासुरक अनुशासन–कठोर जीवनमे प्रवेश करब, दाँतक बीच रसना जकाँ सावधानीसँ बर्तव, नववधूक हेतु कते स्वाभाविक से एहि मैथिली पद्यमे निपुणतासँ अंकित अछि ।

मूल कथानक

महाभारतक आदिपर्वक अनुसार सुभद्राहरणक कथानक निबद्ध अछि । मूलकथा संक्षिप्त रूपेँ एना अछि–

एक ब्रह्मणक गाय चोर चोराकऽ लय परायल । ओकर उद्धार करबामे असमर्थ भेल ब्राह्मण पाण्डवक दरबारमे गोहारि कयलनि । रातिक समय छल, युधिष्ठिर द्रौपदीक संग शय्याश्रित छलाह । पंचपाण्डवक पत्नीत्व ग्रहण कयनिहारि द्रौपदीक प्रसंग नारद मुनिक परामर्शानुसार पाँचो पाण्डव वर्षमे पचहत्तरि राति प्रत्येक भ्राता द्रौपदीक संग बितबथि, एहि बीच यदि केओ नियम भंग करथि अर्थात् किनकहु संगतिक समय प्रवेश कऽ बाधक बनथि अर्थात् शयन-कक्षमे प्रवेश करथि तँ हुनका आत्म-प्रायश्चित्त स्वरूप बारह वर्ष धरि वनवास ग्रहण करय पड़नि । तीर्थाटन करय पड़नि । धनुर्धर अर्जुनकेँ एक ब्राह्मणक गोरक्षाक हेतु अभियानमे अस्त्र-शस्त्रक अनुसन्धानमे द्रौपदीक कक्षमे विवशतासँ प्रवेश करय पड़लनि । फलतः नियमानुसार हुनका प्रवासक दण्ड स्वतः ग्रहण करय पड़लनि । निर्वासन-कालमे कालक्रमे अर्जुन द्वारकाक भ्रमण करैत छथि । ओही बीच वसुदेव-सुता एवं बलराम-कृष्णक बहिनि सुभद्राक वैवाहिक प्रसंग उपस्थित होइछ । अनपेक्षित शिशुपालक संग हुनक विवाहक प्रसंग आबि पहुँचैछ, सुभद्राक प्रेम अर्जुनक प्रति प्रथित अछि । श्रीकृष्णक संकेत पाबि अर्जुन एही बीच आबि सुभद्राक हरण कय हुनक वरण करैत छथि । एहि महाकाव्यक यैह मूल कथानक अछि, जकरा तेरह सर्गमे आबद्ध कय कवि एहि रचनाकेँ सफलतासँ सम्पन्न कयने छथि, जकर सर्गानुसार कथावस्तु निम्नांकित अछि ।

सर्गबद्ध कथानक

पहिल सर्ग

पाण्डवक उत्पत्ति, पालन, शिक्षा -दीक्षा, शील-स्वभाव एवं धृतराष्ट्रपुत्र दुर्योधनक दुःशीलता, कपट-पटुता। फलतः राज्यविभाजन, पाण्डवक नव राजधानी इन्द्रप्रथक निर्माण तथा ओकर रचना-वैचित्र्य । पाण्डवक राज्य-शासनक वर्णन ।

दोसर सर्ग

द्रौपदीक संग पाँचो पाण्डवक विवाह-प्रसंग। देवर्षि नारदक अवतरण, पंचपतित्वक प्रसंग हुनक आलोचना । पुनः साधनाक हेतु संगतिक लेल काल-विभाजन, वर्षकेँ पाँच विभागमे विभाजित कय पचहत्तरि-पचहत्तरि दिनक लेल प्रत्येक भाइक सहवासक निर्धारण, अवधिक अभ्यन्तर प्रवेश-निषेध, तकर परित्याग भेने आत्म-दण्डक निर्धारण, नारी-मूलक विरोधक अनेक उदाहरण-प्रत्युदाहरण । पाँचो पाण्डव द्वारा निमकेँ दृढ़तापूर्वक पालनक प्रतिज्ञा ।

तेसर सर्ग

ब्रह्मणक गायक चोर द्वारा अपहरण। बाह्मणक विवशता, पुनः पाण्डवक दरबारमे सहायताक हेतु हुनक गोहारि, गोरक्षणक महत्त्व, अर्जुन द्वारा आश्वासन, ब्राह्मणक चीत्कार-फटकार, द्रौपदीक शयनगारसँ अस्त्र-उपलब्धिक लेल अर्जुनक तारतम्य । अन्तमे विवश भय द्रौपदीकेँ जगाय अस्त्र-ग्रहण ओ विप्रक गोधनक उद्धार। तदुत्तर नियम पालन-जन्य अर्जुनक आग्रह, युधिष्ठिरसँ कथोपकथन, अर्जुनक दृढ़ता।

चारिम सर्ग

अर्जुन प्रातःकृत्य कय अनुशासन–निष्ठासँ वन-गमनक हेतु प्रस्तुत होइत छथि । द्रौपदी ओ कुन्तीक करुण संवाद। धुनर्धर पार्थक वनवास-यात्राक प्रस्तुति वर्णित अछि।

पाँचम सर्ग

अर्जुनक वनवास दण्ड–ग्रहणक प्रसंग यात्राक समय कारुणिक वातावरणक वर्णन-प्रसंग विस्तारसँ वर्णित अछि ।

छठम सर्ग

यात्रा-क्रममे सहचर लोकनिक उक्ति-प्रत्युक्तिसँ अर्जुनक दृढ़ता वर्णित होइछ । स्थान-स्थानक यात्राक प्रसंग अबैछ । यात्रा क्रममे ऋतुक प्राकृतिक दृश्य वर्णित होइछ ।

सातम सर्ग

वनवासमे समय बितबैत अर्जुन तीर्थाटन करबाक उपक्रममे स्थान-स्थानमे भ्रमण करैत छथि । गंगा प्रभृति तीर्थक यात्रा वर्णित अछि । गंगा-तटपर नागकन्या उलूपी अर्जुनक रूप-गुणपर आकर्षित होइत छथि । अर्जुनहुकेँ प्रत्याकर्षित कय पातालपुरीमे प्रवेश करबैत हुनका संगहि लय जाइत छथि । नागकन्याक मुग्धता, अर्जुन द्वारा हुनक प्रतिबोधनपूर्वक ओतयसँ प्रस्थान ।

आठम सर्ग

अर्जुनक पर्यटन, हिमालय तटवर्ती प्रदेशक यात्रा क्रममे मिथिला-आगमन । मिथिलाक विविध तीर्थक यात्रा, कौशिकी तटपर गाधिराजक आश्रममे निवास । ओतहि प्रसंगगत श्रीकृष्णक चर्चा चलैछ । उत्कण्ठापूर्वक अर्जुनक पुनः प्रस्थान । यात्रा-क्रममे अर्जुन पूर्वदिशा स्थित मणिपुर पहुँचैत छथि जतय राजकुमारी चित्रांगदाक संग विवाहक प्रसंग प्रस्तुत होइछ । कुमारीक पिताक स्वागत–सत्कारक क्रममे अर्जुन पहिनहि वचन-दान दय विवाह-कथाकेँ स्वीकार कय चित्रांगदासँ विवाह करैत छथि ओ तीन वर्षक दीर्घ अवधि ओतहि बितयबा लेल विवश रहैत छथि ।

नवम सर्ग

पर्यटनक क्रम पुनः चलैछ । अर्जुन पंचसर नामक सरोवरपर अबैत छथि, जतय अभिशापित पंच अप्सरा ग्राह रूपेँ स्नानार्थी लोकनिकेँ ग्रस्त कऽ विभीषिका मचौने अछि । एहि उपद्रवेँ त्रस्त एवं जल प्राप्तिसँ बाधित प्रजा-जनमे रोष देखि तथा तद्देशीय क्षत्रिय नृपतिक प्रति अपमान-भाव देखि जातीय अपमानसँ क्षुब्ध अर्जुन एहि क्षोभ-संकटकेँ टारबाक हेतु प्रणबद्ध भऽ पंचसरकेँ ग्राहसँ उद्धार करबाक हेतु वधपूर्वक ग्राहशरीरसँ पाँचो अप्सराकेँ उद्धार करैत प्रभासतीर्थ पहुँचैत छथि एवं ततय द्वारकाक तीर्थयात्रीसँ भेँट होइत छनि तथा हुनकहि द्वारा श्रीकृष्णकेँ सन्देश पठबैत छथि । श्रीकृष्ण आबिकऽ हुनका संग वयस्य भावेँ द्वारका चलबाक हेतु प्रेरित करैत छथि ।

दशम सर्ग

एतेक भूमिकाक अनन्तर मुख्य कथाप्रसंग प्रस्तुत होइछ । श्रीकृष्ण अर्जुनकेँ संग लय द्वारका अबैत छथि । अर्जुनक आवास रैवतक पर्वतपर प्रबन्धित होइछ । पुनः अर्जुन द्वारकाक राजकीय वाटिकाक निरीक्षणक प्रसंग अबैत छथि, ओतहि जलाशयमे स्नानार्थिनी सुभद्रा सखीक संग जलक्रीड़ाक अनन्तर सद्यःस्नाता रूपमे अर्जुनक दृष्टिपथ होइत छथि । दूहूक परस्पर सौन्दर्य-अवलोकन एवं अनुरागक उद्‌भव वर्णित होइछ । पश्चात् रैवतपर अर्जुनकेँ रहबाक वार्ता भेटने देवकी श्रीकृष्णकेँ अनुरोध करैत छथि जे अर्जुन सदृश घनिष्ठ इष्ट बन्धुकेँ बाहर नहि राखि राजभवनहि आनि राखल जाय–इष्ट-बन्धुक प्रति अपनैतीक व्यवहार सर्वथा निबाहल जाय । जाहिपर बलराम अर्जुनकेँ राज-प्रांगणमे आनि एतहि निवास करबाक स्नेहाग्रह करैत छथि । अर्जुन सत्यभामाक संग वार्तालाप प्रसंग भामा वनवासक प्रसंगपर द्रौपदीक पंचपतित्वक आलोचना करैत पृथक दाम्पत्यक उपयोगिता देखबैत अर्जुनसँ अपन ननदि सुभद्राक संग परिणयक संकेत करैत छथि । एहि दूहूक बीच अनुराग पूर्वहिँ अंकुरित छले, सत्यभामाक प्रस्तावसँ सिंचित, क्रमहि विकसित भऽ उठैछ । भामाक आग्रह श्रीकृष्णसँ एहि प्रसंग होइछ जकरा ओ अनुमोदित करैत छथि । एकर विपरीत बलराम सुभद्राक विवाहक प्रसंग दुर्योधनक संग कथा प्रस्तुत करैत ब्राह्मणकेँ हस्तिनापुर पठबैत छथि । अर्जुनक प्रति आकृष्टमना सुभद्रा चिन्तित भऽ उठैत छथि । सखी सभ हुनका हृदयरोगी कहैत वनस्पतिक छद्‌मे पार्थ अर्जुनेकेँ भेषज सिद्ध करैत उक्तिचमत्कार देखबैत छथि । व्यवहार-कुशल सत्यभामा, अर्जुनकेँ नोति अपने घरमे भोजन करयबाक प्रसंगसँ सुभद्राकेँ पाकमे सहायता करबाक आग्रह करैत छथि । पुनः भोजनोत्तर अर्जुनकेँ मुखशुद्धि हेतु पनबट्टी आनि देबाक छद्‌मसँ दूहूमे सामीप्य करवाक प्रसंग प्रस्तुत करैत छथि । दूहूमे पाणि-स्पर्श भेने पाणिग्रहण जेना संकेतित भऽ उठैछ । पश्चात् श्रीकृष्ण एहि विषयकेँ अनुमोदित करैत आवश्यकतावश सुभद्रा हरणक संकेत अर्जुनसँ प्रस्तावित करैत छथि । एहि तरहेँ दशम सर्ग मुख्य कथावस्तुक समस्त उपादान प्रस्तुत करैत सम्पूर्णता प्राप्त करैछ ।

एगारहम सर्ग

एम्हर दुर्योधनक संग सुभद्राक विवाहक उछाह मचल अछि । नगर-परिसर ओ घर–प्रांगणकेँ सजाओल जा रहल अछि, ओम्हर सुभद्राक हरणक प्रसंग अर्जुनक योजना सेहो चलि रहल अछि । सुभद्रा परिस्थिति देखि चिन्ता-मग्न छथि । रुक्मिणी से सभ देखि सुभद्राकेँ अपन वांछाक पूर्तिक हेतु रैवतक पर्वतपर स्थित जगदम्बाक दर्शन-प्रार्थना करबाक प्रेरणा दैत छथि । रैवतक देवी–पूजोत्सवक हेतु सुसज्जित भऽ गिरिजा–पूजनक लेल सुभद्रा

जाइत छथि । फिरबाक समय अर्जुन रथ साजि ओतय पहुँचि सत्यभामाक गुप्त संवाद सुनयबाक व्याजेँ सुभद्राकेँ रथपर चढ़ाय दारुककेँ रथ हाँकबाक आदेश दैत छथि । दारुक द्वारा अनुचित आदेश बुझि रथ नहि हाँकबाक कारणेँ दारुककेँ रथहिपर आबद्ध कय अर्जुन स्वयं रथ हाँकि दैत छथि । सखी सभ हाक लगबैत द्वारका फिरैत छथि । हालापान करैत बलराम घटना सुनितहिँ यादवदलक योद्धा सभकेँ संग लय अर्जुनक संग संघर्षपूर्वक सुभद्राकेँ फिरा लेबाक हेतु अभियानक आदेश करैत छथि । अभियान वर्णित होइछ ।

बारहम सर्ग

यादवगण सात्यकि – साम्ब – सारण– गद – प्रद्युम्न आदि अर्जुनसँ संघर्ष ठानैत छथि । ओम्हर विवाहार्थी दुर्योधन सैन्य संग घटना सुनि बल– संग्रहपूर्वक दोसर दिससँ आबि धमकैत छथि । युद्ध ठनि जाइत अछि, अर्जुनकेँ मूर्छित सन देखि हुनक उपचार–पूर्वक सुभद्रा तत्काल रथ सम्हारि लैत छथि । अर्जुन प्रकृतिस्थ भऽ युद्ध आरम्भ करैत छथि । दुर्योधन आहत होइछ, सेना हुनका रक्षा हित रणभूमिसँ लऽ बाहर पराइत अछि । युद्ध चलैत रहैछ । बलरामकेँ सूचना भेटितहिँ ओ रणभूमि पहुँचि जाइत छथि । श्रीकृष्ण बीच-बचाव करैत पहुँचि जाइत छथि तथा सुभद्राक रथ-सारथ्य कयने अर्जुनक प्रति पतिरूपेँ वरण करबाक प्रवृत्तिक उल्लेख करैत ओ युद्धबन्दीक प्रेरणा दैत छथि । हुनक तर्क–विचारसँ सहमत होइत यादव–सैन्य युद्धसँ निवृत्त होइत अछि । पुनः बद्ध सारथी दारुक मुक्त कयल जाइछ तथा वैह द्वारका रथ लय जाइछ ।

तेरहम सर्ग

यादव सैन्यक द्वारका आपस भेलापर आब विवाहक तैआरी चलय लगैछ । विवाह-मण्डप, कोबर-घर, घर-द्वारि नगर-परिसर सुसज्जित होइछ । बलराम स्वयं सहमत भऽ विवाह-विधि सम्पन्न करयबाक लेल युधिष्ठिरकेँ आमन्त्रित करैत छथि । युधिष्ठिर वरियाती साजि द्वारका पहुँचैत छथि । अर्जुन-सुभद्राक विधिवत् विवाह सम्पन्न होइछ । तदुत्तर शेष अवधिक हेतु अर्जुनकेँ द्वारकामे रहबाक बलरामक प्रस्तावकेँ युधिष्ठिर स्वीकृति दैत अपने बरियातीक संग हस्तिनापुर फिरैत छथि । सासुरक निवास-सुख लैत अर्जुन श्रीकृष्णक मित्रभावसँ रहन-सहन, सार-बहिनोयक हास्य-व्यंग्यक संग समय बितैत अछि तथा अवधिक बितलापर सुभद्राक संग विदा भऽ हस्तिनापुर प्रस्थान करैत छथि । ओतय पहुँचलापर देवर्षि नारदकेँ प्रवेश कराय दूहू दम्पतीक शुभ संवर्धना करैत सुभद्राकेँ वंशवर्धिनी रूपेँ शुभाशंसापूर्वक सर्गक समाप्ति कयल जाइछ ।

एहि तरहेँ भारती कथाक मूल वस्तुकेँ सामयिक तथा देशाचारक अनुकूल बनाय कवि एहि हरणकाव्यकेँ स्वयंवराक परिणय रूपमे विधिवत् सम्पन्न करौलनि अछि ।

महाकाव्यक अनुरूप वर्ण्यविषयकेँ यथास्थान निवेशपूर्वक पात्र-चरित्र, रस-परिणति एवं कथानकक रोचकता बढ़बैत आलंकारिकताक संग आद्यन्त पूर्णता प्राप्त करौलनि अछि।

ऋतु-वर्णन

महाकाव्यक रीतिक अनुसार ऋतुवर्णनक प्रसंग छठम सर्गमे सभ ऋतु आलंकारिक शैलीमे वर्णित अछि। किछु उदाहरण एतय प्रस्तुत कयल जाइछ :–

वसन्त–

मधुमय मधु मासेँ माधवी माँति गेली
नव-नव बहु फूलेँ गौरवेँ फूल वेली।
वकुल कुसुम कुन्दो भालश्री भा लखाबै
सुमन सजल साजी मालिनी तोड़ि लाबै ॥

एहि पद्यमे वासन्ती फूलक संग 'मधु–माधवौ वसन्त' सूचित करैत मालिनी छन्दक उल्लेख पूर्वक मालाव्यवसायिनी मालिनीक श्लेषमय प्रयोग, भालश्रीसँ भालसरी फूल ओ तकर भाल–श्री बढ़यबाक क्रिया-कलाप सेहो समन्वित अछि।

मिथिलाक किछु ग्राम-नामक संकेत दैत फाल्गुनी पदेँ मास ओ अर्जुनक नामान्तर जोड़ैत कोकिलक स्वरकेँ वियुक्त जनक लेल दुःखद सूचित करैत छन्द प्रस्तुत करैत छथि :–

फुलवन महँ चम्पा दिव्यवेलाक शोभा
भ्रमरपुर विराजै मोदपूरैक लोभा।
मदनपुर वसन्ते मोहनारम्भ जानू
कोइल खगक शोरेँ फाल्गुनी दुःख मानू ॥

ऋतुराज वसन्त द्वारा शिशिरकेँ वसन्तपंचमीक स्थितिसँ पदच्युत कय राजनीतिक समावेश कोना कयने छथि से द्रष्टव्य थिक :–

शिशिर असह शीतेँ जीवकेँ कष्ट देले
सुनि-सुनि ऋतुराजा क्रोधसँ क्षुब्ध भेले।
असमय अछि कागो ताहिसँ छीनि लेले
अहि–तिथि सुदि माघे सूचना ताहि देले ॥

क्रमहि ग्रीष्मक भीषणता देखल जाय :–

तरणि पुहुमि तापो तापसँ तप्त भेले,
सरक सरस नीरो शैत्यकेँ त्यागि देले।

तपन अपन संज्ञा सार्थ के कैल जानू,
कहक हित निदाघे दाघदायी बखानू ।।

तथा–

दिवस बढ़य मानू द्रौपदी-वस्त्र रूपे,
निशि अति घटि गेले भिक्षु-वस्त्र स्वरूपे ।
उषम विषम लागै गेह आबा समाने,
घट न घट पिआसो कै घटो पानि पाने ।।

वर्षाक आगमन–

गगन गरज मेघो चंचला ज्योति देखू,
कड़कि कुलिश पातो भयप्रदे ताहि लेखू ।
जनु मदन निवेशेँ पावसी सैन्य भारी,
निधन करय चाहै प्रोषिता विश्वनारी ।।

वर्षाक घनान्धता–

निशि-दिनक विभेदो बूझवो भेल भारी,
शशि-रवि नहि देखी व्यापु जेँ मेघकारी ।
उपगत ऋतु श्रान्ति-शान्त्यर्थ दूनू,
सुति सुखमय सेजे निन्दसँ आँखि मूनू ।।

वर्षा, धान किसान ओ बाढ़ि व्यवधान :–

अभिमत जल योगेँ वर्धितो भेल धानो,
बरिसय वरबुन्दो मोद मानै किसानो ।

तथा–

वढ़ल जल नदीसौँ बाढ़िमे भास धानो,
क्षति कृषिहिक भेने क्षुब्धचित्तो किसानो ।।
पुन-पुन कर खेती वीरता वेष धारै,
विजित नृपति रूपेँ फेरि फौजे सजाबै ।।

हेमन्तमे अगियासीक सेवन-स्वभाव :–

हिम ऋतुक प्रवेशेँ शीत सर्वत्र व्यापै,
बिनु अनलक सेवेँ जाड़सँ हाड़ काँपे ।

जत-जत बढ़ शीते मानि कै चित्र त्रासे,
तत करु तपनो तेँ अग्निकोणेक आशे ।।

शिशिर शीर्ण : ऋतु जीर्ण :–

शिशिर वयस वृद्धो बूझवा योग्य भेले,
झरु तरु दल रोमो म्लानता अंग लेले ।
वन-उपवन शोभा ओ कहाँ ताहि ताकू,
जनु सब धन लूटै पश्चिमी यौन डाकू ।।

एही प्रकारेँ :–

बितै षड् ऋतु निज स्वभावहि सतत सभ जन जान ।
तदपि सुखदुखमय प्रबोधक जे जेना से मान ।।

छन्द-प्रसंग

सर्गबद्ध महाकाव्यमे छन्दक विधानमे कहल गेल अछि जे सर्ग जाहि छन्दमे रचित हो सर्गान्तमे ओकर परिवर्तन हो तथा कोनहु सर्ग एहनो हो जाहिमे विविध छन्दक प्रयोग हो । 'छन्दः पादौ तु वेदस्य' कहि वाक्यकेँ गतिमान् बनयबाक लेल छन्दक विधान कयल गेल अछि, काव्य एवं कविताक नाम लितहि छन्द-बन्धक स्वरूप साकार भऽ उठैछ । छन्द मात्रिक, वार्णिक एवं दण्डक भेदेँ अनेकानेक प्रचलित अछि । संस्कृत महाकाव्यमे विशेषतया वार्णिक छन्द प्रचलित अछि । भाषाक काव्यमे मात्रिक छन्दक प्रयोग प्रचुर रूपेँ प्रचलित अछि ।

सुभद्राहरणक प्रथम सर्ग रूपमाला छन्दमे, द्वितीय सर्ग वसन्ततिलकामे, दूहू वार्णिक छन्द अछि । तेसर सर्ग मात्रिक रोला एवं चतुर्थ सर्ग हरिगीतिका मात्रिक छन्दमे । पाँचम पुनः वार्णिक द्रुतविलम्बित एवं छठम मालिनी छन्दमे निबद्ध अछि । सातम आठम ओ नवम सर्ग हरिगीतिका भेद-उपभेदेँ निबद्ध अछि । पुनः एगारहम द्रुतविलम्बितमे, बारहम ओ तेरहम सर्गमे विविध छन्दक प्रयोग कयल गेल अछि । भाषा-काव्यमे वार्णिक छन्दक प्रयोग विरल भेटैछ, मुन्शीजी तकर प्रचुर प्रयोग कय अपन छन्दरचनाक नैपुण्य प्रदर्शित कयने छथि । प्रत्येक सर्गान्तमे छन्द परिवर्तित भेल अछि ।

सम्पूर्ण ह्रस्व स्वरक लघुमात्राक छन्द वितान द्रष्टव्य थिक :–

हलचल पड़ल सकल लशकर दल
झटपट बखतर सज रणपर चल ।

तरकस कस दय, दय नव-नव शर
धर-धर तसकर कह जय जय हर ।।

तहिना संयुक्त द्वित्व वर्णप्रयुक्त अमृतध्वनि छन्दकेँ स्पन्दित देखू :–

गन ने सैन्य से सजि चलै रण मदसँ उन्मत्त ।
पड़ै पैर नहि थीर नहि क्रोधहि रह चित तत्त ।।
तत्त तमकि पदद्दल दलितहिँ मेदिनि दलकत ।
धद्धधमकल युद्धध्वनि सुनि कच्छप छपकल ।।
गज्जो गरज दिगज्जोलरज सुपर्वो भय मन ।
रज्जहि सुज्झ न पंथो बुज्झ न जुज्झन के गन ।।

छन्दक विविधता एवं रसानुकूलता श्रुतिसुखदता सबतरि पसरल अछि । विस्तारय-तारय अनावश्यक अछि ।

रस-प्रसंग

काव्यलक्षण मुख्यतः 'काव्यं रसात्मकं वाक्यम्' सर्वाधिक मान्य अछि । विद्यापति काव्यत्वक सभ लक्षण समन्वित कय आन उपलक्षणकेँ विशेषण रूपेँ एवं रसकेँ विशेष्य रूपेँ निरूपित करैत कहने छथि :–

अदोषं गुणवत् काव्यमलंकारैरलंकृतम् ।
रसान्वितं कविः कुर्वन् कीर्तिं प्रीतिं च विन्दति ।

तदनुसार रस-गुण-रीति-अलंकृति-दोषराहित्य सभक समन्वित किछु मात्र उदाहरण सुभद्राहरण महाकाव्यसँ स्थाली-पुलाकन्यायेँ एतय प्रदर्शित अछि ।

रूप-वयससँ प्रेमांकुरित अनुराग प्रभावित शृंगाररसक उद्भावन :–

कमल कर-पद कमल दृग-युग कमलकलिका उरज राजै ।
कमलसौँ सरसे वदन छवि कान्ति कमलहुँ दिव्य भ्राजै ।।
ठाढ़ि तटपर वदन पोछथि रूप अनुपम पार्थ पेखल ।
कमलवनसँ अपर कमला प्रगटु ई निज मनहि लेखल ।।
पाबि पँचसर पार्थ पँचसर सन बिसरि छवि प्रगट कैले ।
शुभ समयमे प्रथम दर्शन परस्पर तहि ठाम भेले ।।

उत्साह-मूलक वीररस :–

ढारि देब अपन प्रभुत्वहीन पाशा आब,
गोट गोट गोटी विश्व वीरक संहारि देब ।

झारि देब अस्त्र-शस्त्र शत्रुक समूहपर,
रुण्डमुण्ड झुण्ड़-झुण्ड भूतल पसारि देब ।।

क्रोधमूलक रौद्र रस....

पार्थ आँखि लाल-लाल भेल सूनि गारिकेँ,
चट्ट यानकेँ घुमाय सैन्यकेँ निहारि कै,
क्रोध-अग्नि आहुते समान बात बाज तेँ,
के कोना सहय भला रखैत वंश लाज कैँ ।।

शोकमूलक करुण.....

बहुत शोकक वेगमे लखि नृपतिकेँ अर्जुन तहाँ ।
कहु भ्रातृप्रेम समुद्र उमड़ल ताहिमे भसलौं अहाँ ।।

हासमूलक हास्य....

हँसि व्यंग्य कथा कह कृष्णप्रिया,
कह चोरहिँ देब कि राजधिया ।
बड़ लोकक बात कोना ने करू
जग बीच हँसी सहबो ई करू ।।

सन्तति स्नेहमूलक वात्सल्य....

कुहरि कहलनि कानि कुन्ती दोष कर्मक थीक ई ।
अहाँके वनवास भेने प्राण रह से नीक की ?

आदि-आदि महाकाव्यक सर्ग-सर्गमे निसर्गतः रस-भाव संभृत अछि । 'न रसो भावहीनोऽस्ति न भावो रस वर्जितः' एतय सर्वथा चरितार्थ अछि ।

सात्त्विक भाव पुलक-रोमांच आदिक प्रसंग....

पानि परसहिँ तन परस्पर पुलक प्रेमक पुंज जागल,
प्राण-प्राणक सम्मिलनसँ दूध खाँड़ स्वरूप लागल ।
दुहुक मोदक उत्स रोमक कूपसँ उच्छलित भेले,
स्वेद स्वेदित कर परस्पर कर सुभद्रा ससरि गेले ।।

रूप-दर्शन प्रेमांकुरित ओ मिलन-प्रसंग....

भमिनी सौँ भरल भवनहुँ नयन-नयनक मिलन भेले ।
सैन-सैनहिमे परस्पर मुग्ध वैनहि कथन भेले ।।

मन-मिलानक सूचना मृदु-मृदु मुसुकि दुहु दुहू देले ।
मानु मन ओ सुधासिंचन बीच प्रेमांकुरित भेले ।।

तथा ....

चारि खंजन खेल युगपत युग कमल पर मोद लैले ।
रूप-रज्जु बझाय राख ने मन पलक पर झँप धै धै ।
प्रकृति चंचल लालचहिँ पुनि-पुनि निकसि निज गति लखावै ।
रूप चखि चख-चमक छूट ने बरज मान ने ओतहि धावै ।।

अलंकार-प्रसंग

रस शृंगार एवं क्रीड़ा-कौतुकक समन्वय करैत सतरंजक खेलक समस्त पात्र संग रूपक अलंकारक सांगोपांग वर्णनक चमत्कार कोन प्रकारेँ कवि प्रदर्शित कयलनि अछि से द्रष्टव्य थिक...

यौवनक सतरंजरत रहु पुरुष-नारि खेलाड़ि ।
मन-महीपतिकेँ कटाक्षक सप्ति सह देल मारि ।।
बुद्धि धृति किश्ती-पदातिक चालि व्यर्थ विचारि ।
युक्ति यतनहु भेल त्राण ने, मातु मानल हारि ।।

परिसंख्या....

हो प्रदोषहि शब्दमे तहँ दोष शब्द उचार ।
नववधू रति रमित पतिसौँ करए क्रोध प्रचार ।।

रूपक....

पुरुष-पुरटकेँ विपति-निकषपर होअ परीक्षा ।।

परिणाम....

विपति-तिमिर पड़ि धीरक प्रज्ञा द्युति बढ़ मानू ।

उत्प्रेक्षा....

पूछि बूझि सभ बात भूपकेँ अतिदुख भेले ।
जनु हृदि मर्महि अकस्मात् शूले धसि गेले ।।

निदर्शना....

ककर दर्प थिक क्रुद्ध सर्प-फणि कर धै भिड़ता ।

विरोधाभास....

कहक हित निदाघे दाघदायी बखानू ।

सन्देह उत्प्रेक्षागर्भित....

की थिक उच्चधाममे टाँगल विद्युत ज्योतिक दीप ।
उदधि पोतवाहक बुझबा लै थल विश्राम समीप ।।

तथा...

की थिक नभगत नमित पेटारा कौतुक हो आभास ।
रविक बिम्ब तहि कहिअ ताहिकेँ जगत करत उपहास ।।

अपह्नुति ....

अश्रु नहि थिक नयन द्रौपदि थीक स्नेह प्रवाह ई ।

उत्प्रेक्षा....

अतिशय अपमाने म्लान पक्षीक रूपे
विटप-विटप घूमै कानि दीन स्वरूपे ।
छमु छमु मम दोषे आर्तवाणी सुनावे,
थिक ऋतु शिशिर ई कोइली गीत गावे ।

उपमा....

पाण्डवक मन नीतिरत दुर्नीति कौरव ध्यान ।
दुहुक सम्मेलन बुझक थिक दूध-अम्ल समान ।।

वर्ण-विन्यास

मानवीय प्रसिद्धिक उपादानक क्रमवर्णनमे छेकानुप्रासमे वकारादिक पदक विन्यास, यथा....

बुद्धि विद्या बल विभवसँ बढ़ल विश्वहि नाम ।

तहिना,मानव-पतनक कारणीभूत हेतुक विवरणमे पदमैत्री....

कुल कलह की कुशल कारक करिअ मन विश्वास ।
वंश-वंशक रगड़ अनलहि वंश-वंशक नाश ।।

वर्णक आदि-विन्यासक योजना, यथा....

परिचय पंखा पवन प्रचारहि परम प्रमोदहि पागि ।

....

पुरजन पड़ल पराभव पर नहि परम दया दृग कोर ।

....

छीनए छपाकर छटा छिति छापि वेश ।

वीर रसानुकूल पद-संघटना ओ छन्द प्रयोग : चारण-काव्यक छवि छटा : यथा....

तत्त तमकि पद द्दल दलितहि मेदिनि दमकल ।
धद्ध धद्ध-धमकत युद्धद्धुनि सुनि कच्छप छपकल ।।
गज्जो गरज दिगज्जो लरज सुपर्वो भय मन ।
रज्जहि सुज्झ न पंथो बुज्झ न जुज्झन के गन ।।

वर्णन-विन्यास

सुभद्राहरणमे प्रसंगानुकूल ऋतु-प्रकृति एवं मानव-प्रकृतिक सुन्दर वर्णन व्याप्त अछि। एतदतिरिक्त मिथिला-वर्णनो अछि तँ कन्याकेँ गार्हस्थ्यक उपदेश सेहो अछि, ज्योतिषक गणनो अछि तँ दर्शनक अनुकरणो अछि । एतय प्रस्तुत अछि कविक वर्णन-कलाक किछु झलक....

वर्ग भेद : सामाजिक असमानता....

देखल कतहु धनी जन मदसौँ बैसल मसनद लागि ।
परिचय पंखा पवन प्रचारहिँ परम प्रमोदहि पागि ।।
पुरजन पड़ल पराभव पर नहि पड़य दया दृग कोर ।
बुझि पड़ पाथर उपरहि चिक्कन भीतर परम कठोर ।।

दीन-दुखी परिवारक चित्रण....

देखल कतहु दीन-दुखिया केँ दुःखहि दूबर देह ।
भूखल भवन-भवन भरमय कत करुणहि कह किछु दैह ।।
गेह-विहीन देह नहि परिहन कष्टहि गोपय अंग ।
कनइत करुणा कर कत अवला लहु लहु संतति संग ।।

सन्ध्या वर्णन....

साँझ दीपित गगनक छतमे शशिप्रभ दीपक वार ।
चकमक चहुदिस शीतल सुखकर ज्योतिक जाल पसार ।।

चन्द्रिकारात्रिवर्णन....

की शशि स्रवित सुधारस पसरल की कपूरमय भेल ?
की महि मढ़ल तबक चानी की दूधहि धोअल गेल ?

ताराकावस्ती...

गगनहि नखत ज्योति नहि थिक ई बूझिअ कय अनुमान ।
नभगंगामे देव-दारिका दीपावलि कर दान ।।

प्रभात-वर्णन....

रयनि रानिक तिमिर-पटकेँ निठुर खैंचे हाय,
सुन्दरी सेफालिकाकेँ रहै माटि मिलाय ।
तोड़ि आशा नवल जोड़ी विरह बोर चकोर,
कत अनर्थ ने करय नित प्रति महापापी भोर ।।

संक्षेपमे यात्रा-प्रसंग, देश-कोश जन-जनपदक नगर-गामसभक समेकित वर्णन....

पथक दूहू दिस कत-कत देखथि नगर गाम पुनि टोल ।
सज्जन धनी कृषक बनिहारो बसय भिल्ल ओ कोल ।।
देखल कतहु सजल फुलवाड़ी कतहु फलक बड़ बाग ।
कतहु कूप वापी सर सुन्दर सरसिज सहित तड़ाग ।।

पुष्पवाटिकाक शोभा....

कतहु तगर पलास चम्पा जया सेवन्ती विराजै ।
कतहु पाटल-पटल पुष्पित सुरभि शोभा सीम भ्राजै ।।
कतहु केतकि कुन्द कुटबक कुसुम कुंजक पुंज-पुंजे ।
कतहु करबीरक कतारे केतकी कचनार कुंजे ।।

पर्वतमे हिमालयक वर्णनप्रसंग....

गिरिराज मस्तक मुकुट राजित जटित रत्न अनेक जे ।

तथा....

युग-युग लसित की तुंग व्याजहिँ भारतक कीरति-पटी ।
की शैलराज विराट की हिमजूट शोभित धुर्जटी ?

पर्वत-निर्झर...

गिरिखोहरसँ झरना झहरि रह अनवरत से देखि कै,
सभ निरखु एकटक मोद मनसौँ कहल तँह क्यो पेखि कै ।
नग मत्त गजवर दूस दिग्गज गगन चुम्बन चित चहै,
लखु गंडथलसौँ स्रवित भै-भै मदक जनु धारा बहै ।।

सर-सरि नद-नदी-वन-उपवन–संक्षेपहि वर्णित....

पंक्ति-पंक्ति पदाति पादप राखु सभ खन सज्ज देखी ।
पल्वलो झरना सरोवर नद-नदी परिखा परेखी ।।

एवं....

दिव्य वनमाला विराजित हरि दरस नित लौ लगाओल ।

आ...

ततय उपवन अति अनूपम निन्द्यनन्दन सहज जानी ।
प्रमदवनहुक सुगमतासौँ सुभग अतिशय मनहि मानी ।।

यात्रा प्रसंग.....

निशि बसथि कहुँ गाम गोप बथानमे ।
की कतहु तरु छाह की सुनसानमे ?

मिथिला वर्णन....

नित जनिक शीश सहस्रदलपर गुरु गिरीशक ध्यान हो,
नित जनिक हृदयक बीच कमला वासिनी छवि ज्ञान हो ।
नित जनिक पद सुरसरि पखारथि पुण्य गुनि वरदायिनी,
कहु एहन मिथिलामहिक महिमा के न कह अन्यायिनी ।।

मधुशाला....

मधुशालामे मधुपक गोष्ठी बलरामक छल बेस ।
मधुक मधुक मटुकी फल-फूलक आसव सजल विशेष ।।
निरत पानमे शान चढ़ल चित बढ़ल चारु चख लाल ।
हास-विनोद क्रोध-कोलाहल करबहिँ सबहुँ बेहाल ।।

कन्याकेँ गार्हस्थ्यक उपदेश....

श्वसुर पिता मन मानि सासुकेँ माता मानब ।
पतिक सहोदर भाइ तनिक तिय भगिनी जानब ।।
सौतिनि संगिनि ननदि सखी मानब परिवारे ।
सभक संग सभ समय सख्य राखब व्यवहारे ।।

तथा ....

गृहिणी भै गृहकार्यकुशलता सभ खन मनमे लावी ।
पाक-पटल पटुता पौनहि पर परहुँ प्रशंसा पावी ।।
पर परिहन रचना शुचि नव-नव कला कुशल दरसावी ।
पाबी पतिघर परम प्रतिष्ठा प्रीति-रीति अपनावी ।।

एवं....

प्रपा रूपहि तृषावंतहिँ करव जीवन दान ।
अन्नपूर्णा सदृश क्षुधितक हेतु अन्न प्रदान ।।
रोग-पीड़ित जनक सेवकरूप निस-दिन ठाढ़ ।
दीन-दुखिया दुख हरणमे निरत प्रेम प्रगाढ़ ।।

आ....

रौद दगधक हेतु छाया श्रान्त व्यजन समान ।
आर्त हित आश्वास वाणी शत्रु चण्डी जान ।।
सतत चित्त उदार राखब वचन मधु सन मान ।
गृही हेतुक शुद्ध लक्ष्मी बनि करब कल्याण ।।

तपोवन....

केअओ योगक तत्त्वमे संलग्न भै,
केअओ रह षट्चक्र भेदन मग्न भै,
केअओ आसनहीक साधन लागले,
केअओ रत संन्यास झंझट त्यागले ।।

शास्त्रसन्निवेश : सामासिक संगति....

तत्पुरुषहिक भाव तैँ सभखन धरी,
बहुव्रीही युत रह'क यत्नो करी ।
कर्मधारय चित्त नित चिन्तित रही,
अपव्ययमे भाव अव्ययिए रही ।।

एवं–

द्वन्द्वबन्धक बीचमे नहि व्याप्त हो,
धर्म धनबल द्विगु द्विलोको प्राप्त हो ।

ज्योतिष....

छल शुभ दिवस नक्षत्रादिक सौँ लक्षित सिद्धे योग ।
ताहूमे पुनि लग्न विचारैँ परमोत्तम ग्रह भोग ।।
द्वादश वसु गृह शून्य जानि शुभ दैवज्ञहि दै दान
सुनइत श्रुति-धुनि विप्र वटुकमुख अर्जुन कैल प्रयान ।।

एतय तिथि नक्षत्र योग लग्न प्रभृति ज्योतिषक ज्ञान एवं यात्राक शुभ शकुन आदिक उल्लेख हुनक व्यावहारिक ज्ञानक परिचय दैछ ।

निशा-नशीथ वर्णन....

झिलमिलाय किछु काल ज्योति शशि भय गेल मन्दा ।
तम-तुराइ जनु तानि सुतल आलस वश चन्दा ।।
तम तस्कर तत् छनहि चेराओल चन्दा चानी,
प्रिया पहुक मन जुगति चोराओल अवसर जानी ।।
निद्रा क्रम-क्रम जगत-जनक चित चेत चोराओल ।
भावी अर्जुन राज-सुखक चोरी चित धाओल ।।

दार्शनिकताक परिचय दैत भर्तृहरिक कर्मवादक 'नमस्तत् कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति'क अनुसरण करैत कविक उक्ति.....

कर्मक्षेत्रे थीक जग श्रुति कहै,
कर्मबीजक रूप कर्मक फल गहै ।
कर्म कंटक कर्मबल नाशै सही,
कर्म कर्मे थीक मनुजक हित कही ।।

लोकोक्ति

जन-साधारणक अनुभूत वस्तुकेँ जखन कविक वाक्य काव्य-योजित करैछ तखन ओ लोकोक्ति रूपेँ समाजमे व्याप्त होइछ । मुन्शीजीक रचनामे एहि प्रकारक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । किछु बानगी एतय आकलित अछि....

१. सिंह सावधानकेँ शृगाल की पछाड़ते
२. मूस माटि कोड़ि की पहाड़केँ उखाड़ते
३. टूट की पहाड़ पावि वारि वुंद चोटकेँ
४. हो समान मे समान युद्ध शास्त्र-नीति सें
५. दूधमूह बालसौँ लड़ैत लोक की कहै
६. घूटिअहि पानिमे ने डूवि कै किऐ मरी
७. धैल फूटि जाय छोट कंकड़ौक चोटसँ
८. बान्हीअ आरि बहिओ यदि गेल वारि
९. विधिवश विघटन कालमे देखक थिक दृढ़ मान
१०. हेमन्तं दीर्घ निशि की नहि हो प्रभात
११. प्रिय सुयश प्राणहुसँ धरी ताहि बचाय कै
१२. जाति लांछन असह बुझ आघात ई
१३. लोकोक्ति मध्य सभकाँ सभ ई कहैछ
पैघेक रीतिमत छोट जनो चलैछ

उपदेश-वाक्य

१. दुःखो सहैत नहि त्याग करी सुकर्म
२. पुरुष-पुरटकेँ विपति-निकषपर होय परीक्षा
३. विपति-तिमिर पड़ि धीरक प्रज्ञा द्युति बढ़ मानू
४. संसार सोदर–विभेदक द्रव्य दार

५. दुःखो सहैत नहि त्याग करी स्वधर्म
६. दोषोक दंड सहने नहि होअ हानि
७. क्षणभंगुर संसार केओ ने रहल न रहते
८. धैर्य तट अवलंब मानी उचित विपतिक कालमे
९. अतिथि सभ खन सेव्य मुनिकहुँ
१०. आर्त जनपर करक नहि थिक कोप... ॥

व्यवहार-वाक्य

लोक-व्यवहारक अनेकानेक प्रसंग-संगत प्रयोग कयल गेल अछि ।

दीपावलीक सन्ध्यामे उल्का-भ्रमण एवं दरिद्रा-दलन हेतु सूप डेङायब.....

'पितरक परधाने ऊक आलोक देखू ।'

'वधु कृत रव सूपेँ दारिद भागू ।'

फगुआक रंग-अबीर.....

डंफ रव करताले गीत अश्लील गावै ।
मन मतल मतंगे से अवीरो उड़ाबै ।
भरि-भरि पिचकारी रंग दै दै भिजाबै
जन गरिब धनीको भेद पर्वे मेटाबै ॥

खण्डकाव्य

महाकाव्य रचनासँ पूर्व कविवर मुन्शीजी 'वीर बालक' नामसँ खण्डकाव्यक रचना कयलनि । भवभूतिक उत्तरंचरितक उपान्तमे लवकुश एवं चन्द्रकेतुक आश्वमेधिक अश्वक धर-पकड़मे जे वीररसोचित कथोपकथनक प्रसंग अछि ताहिसँ ओ प्रभावित भऽ एकर रचना कयलनि । एहिमे सीता-वनवासक कथासँ लय यज्ञान्तमे राजसभाक बीच कुशलवक उपस्थिति ओ रामायण गानक प्रसंग धरि, जानकीक स्वर्ण-प्रतिमा स्थापनासँ पुनः साक्षात्कार धरिक कथा वर्णित अछि जे अंष्ट सर्गसँ न्यून रूपेँ भाषामे प्रचलित मात्रात्मक छन्द गीतिका-हरिगीतिकामे निबद्ध अछि । आरम्भ अछि रामक राज्यासीन भेलापर; प्रजाजनक प्रति कर्तव्यतत्पर त्यागमूर्ति श्रीरामक उत्तर चरितक एहि श्लोकक मूलसँ....

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि ।
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति मे व्यथा ।।

यथा–

श्रीसुभग साकेत शेभा तखन अतिशय भेल,
जखन सिंहासनहि रविकुलरवि कमल पद देल ।
भूपगण कत लए उपायन प्राप्त रहु तेहि ठाम,
नमित रघुनन्दन-चरणमे करु सभक्ति प्रणाम ।।

प्रथम सर्गक प्रारम्भ करैत द्वितीय सर्ग मे रामक चिन्तन चलैछ–

घोर मनमे द्वन्द्व उठले उचित की कर्तव्य,
बूझि नहि पड़ मैथिलीकेँ लिखल की भवितव्य ।
बहुत तर्क-वितर्क पर गेल घोषणापर ध्यान,
प्रिया त्यागहुमे कदापि न करब हम मन म्लान ।।

आज्ञाकारी लक्ष्मणक चिन्ता :

करब की ? आज्ञा पुराएब पुराएब मात्र मम कर्तव्य,
करहि पड़तनि भोग्य जे छनि भाग्य ओ भवितव्य ।

परित्यक्ता सीताक स्थितिपर दिव्यदर्शी बाल्मीकिक आश्वासन :

हो हमर आश्रमक आश्रय हिनक शुभद विशेष,
कुटी हमरो सुयश पाबओ प्राप्त अवसर वेस ।

तदुत्तर वीर बालक जन्म लेलनि, मुनि द्वारा संस्कार पौलनि : संवर्धित भेलाह–

शुभ घड़ी शुभ लग्न शुभ दिन मध्य लेल अवतार,
सूर्यकुल-सर कमल अभिनवयमज राजकुमार ।

एवं...

गुनि समय लग्नादि मुनिवर नामकरणो कैल,
जेठकेँ कुश छोटकेँ लव, दिव्य संज्ञा धैल ।

तथा....

युगल शिशु वय-बल बढ़य नित एहन बुझना जाय ।
शुक्लपक्षक शशिकला जनु दुगुण रूप लखाय ।।

पुनः शिक्षा-दीक्षा : संस्कार-प्रकार, शास्त्रक संग विविध शस्त्रास्त्रक ज्ञान :

क्रमहि क्रम सभ बाल-कौतुक दुहूकेँ छुटि गेल,
अक्षरक आरम्भ ऑजी सिद्धिरस्तुहि भेल ।
उचित चूड़ाकरण क्षत्रियकुलक रीति कराए,
शुभ समय यज्ञोपवीतक कर्म देल पुराय ।।''
''वेद-उपवेदो क्रमहि क्रम पढथि चित्त लगाय,
तत्त्वपाठक बाल्मीको देथि सविधि बुझाय ।''
''धनुर्वेदे क्षात्रधर्मक मुख्य विद्या थीक,
सिखथि दुहु जन यत्नसँ तेँ प्रगति नितप्रति नीक ।।
ब्रह्म, वैष्णव, पाशुपत संग आग्नेयक रीति,
प्रबल सम्मोहन प्रजापत वारुणास्त्र सप्रीति ।
अस्त्रविद्या उदधि मज्जन कएल वारंवार,
वुझि पड़य दय-दय परीक्षा भए गेला दुहु पार ।
अस्त्र-शस्त्रक शास्त्रमे लखि दुहूकेँ परिनिष्ठ,
राजनीतिक पठन-पाठन मध्य कयल प्रविष्ट ।''

एहि तरहेँ वीर बालकक भूमिका प्रस्तुत कऽ तकरा कसौटीपर कसल सोना जकाँ चमकयबा लेल श्रीरामक अश्वमेध–यज्ञ प्रस्तुत कय, तकर रक्षाहित चन्द्रकेतुक नायकत्वमे सशस्त्र सैन्य जखन तपोवनमे प्रवेश करैछ तखन यज्ञाश्वकेँ वीर बालक कुश-लव पकड़ि लैत छथि तथा हुनक वीरत्व अग्नितप्त स्वर्णजकाँ चमकि उठैछ : अश्वक शीर्षपर लटकल घोषणा-पटकेँ उतारि वीर बालक लव वीरोचित उक्ति कहि उठैत छथि...

दर्पसौँ जे लेल, फेरब कायरक थिक काज,
जनु गुनी तेहि मध्य हमरा कही हम निव्याज ।

सुनितहिँ रक्षक-दलमे घोल मचैछ :

बुझि पड़य ई अद्‌भुते सन रूप रह दरसाय,
अग्निकणसौँ हिमक हर्म्यहि ज्वाल जनु धुधुआय ।

एहि तरहेँ वीर-रसक प्रतीक लव-कुशक वीरता कैँ अंकित करैत कवि एहि खण्डकाव्यकेँ वीररसात्मक लघुकाव्य रूपमे अंकित करैत उत्तरचरितक कथानककेँ सर्वथा सफल बनौलनि अछि ।

गीत-रचना

मुन्शीजी मिथिला-प्रचलित नचारी-महेशवाणीक बहुतो स्फुट रचना कय गेल छथि जे तत्कालीन गवैया, नटावा ओ नटुआ-वर्गक कण्ठमे अभ्यस्त छल। कंठगत हिनक गीत बहुतो संकलित नहि भऽ सकल। अथापि एखनहु पुष्कल संख्यामे ओ गानकर्तालोकनिक कण्ठसँ लोकगीत रूपमे प्रचलित अछि। दु-एक नमूना रूपमे एतय उद्धृत कयल जाइछ। महेशवाणी यथाप्रचलित गौरी-शिवक अनमेल सन विवाहक प्रसंग.....

आगे माइ अपजश वरु हम लेब जगमाही।
गौरीकेँ हम हे विआहब नाही॥
तेहि अवसर नारद मुनि आय।
मैनोकेँ ऋषि हे कहि समझाय।
सदाए गउरी उन्हकहेँ पिआरी।
अस दिन पाणि धरु वर करु त्रिपुरारी।
नारदवचन मानल सभ नारी,
सुभ-सुभ हे शिव! सिन्दूर ढारी।
कह रघुनन्दन सुनु गौरीशा
परिजन केर करु दुखकेर नाशा॥

दोसर गीत.....

हे शिव, मोहि जनु करिअ निराशा।
भजल तोहि हम जानि जगनाथा॥
सब गुण आगर तोहेँ महेशा।
हम गहलहुँ तोहेँ धरि मन आशा॥
नाम साँच तुअ पुन जग-दाता।

जगसँ बाहर हम नहि नाथा ।।
तुअ सन पिता शिवा सनि माता ।
मिलिहहि कओन जगत अस दाता ।।
कह रघुनन्दन सुनु हे ताता ।
तेजबह मोहि जानि जड़ नाथा ।।

भक्तिपथमे गीतक प्रशस्ति सदा सभ भारतीय भाषामे भेटैत रहल अछि । रस-कवि विद्यापतिसँ अद्यतन कवि धरि अपन अन्तिम स्वरकेँ भक्तिगीतमे परिणत करैत आयल छथि । हिनक भक्ति गीतक किछु पंक्ति....

सुनु-सुनु अम्ब विनय किछु मनसँ बिसरि तनय अपराध ।
कतय शुभक आशा हिय-अन्तर अहँक विमुख पल आध ।।
सहज स्वभावहि निज सुत रक्षिणि जननी जगभरि जान ।
कुकरम कोटि निरत सुतहुक प्रति नहि हो हृदय पखान ।
हम कुकरमरत अनुपद अनुगत जानि हृदय निज माय ।
आश धरिअ हिय विपति समय मह होएब मोहि सहाय ।।
अति दुरमतिसौँ छलै शरण हम नहि किछु आन उपाय ।
करिअ दयाकरुणामयि सुत प्रति रघुनन्दन कहु माय ।।

देशक जागरणक संगहि स्वदेशक नवोत्थानक धारणा सेहो जागृत भेल । राष्ट्रक संग क्षेत्रीय विकासहुक भावना उद्‌भावित भेल । मुन्शीजी सेहो एहि मिथिलाक नवजागरणमे अग्रसर रहलाह । तत्कालीन मैथिलीक मुखपत्र मिथिलामोदमे एहि प्रकारक गीत-रचना हुनक प्रकाशित होइत रहल । किछु एतय उद्धृत कयल जाइछ जाहिमे मिथिला-मैथिलीक नवजागरणक स्वर मुखरित अछि....

उठू हा ! आँखि खोलू औ कहूं श्री मैथिली माता ।
अहा ! ई आसुरी औंघी पड़ैली, आँखि खोलू औ ।
सुनू हे ! मैथिलीए धै कहू श्री मैथिली माता ।।
विजाजी हींहि वाजी जा ई धैने किच्छुओ बाजब ।
कहू मैं–हम कहू हूँ छी कहू श्री मैथिली माता ।।
बुझू होता होइत जौँ आइ माता सामहीनो जन ।
ततै ई याविनी ई की समैती मैथिली माता ।।
जतै योगी तथा भोगी निरोगी देशमे भेला ।
सदेहो भै विदेहे ! ऐँ रटू श्री मैथिली माता ।।

दोसर गीत.....

मैथिल ! पड़ले रहब दिन-दिन परजन धूसबे सहब ।
घर-घर दर-दर फूसिए बाजब, सतत परक धन देखिए जरब ।
उठू-उठू जागू मैथिल, उठू-उठू जागू ।
कतेक सुतब कने ताकू अंग वंग जागू ।
योग याग जप-तप किछु ने अहाँक लागू ।
जतए केहन-केहन पंडित दर्शन विद्या लागू ।
ततय सतत लोक सबहि सतत पाबथि फागू ।।
जतय मुदित नाचि-नाचि देवी कहल माँगू ।
ततय संप्रति आलस मारल नृपति कहथि भागू ।।
पंडित-मंडल शोभित नृपति की की विषय तागू ।
आलस छोडु, आँखि खोलु, अपन उद्योग लागू ।।

गद्य-लेखन

साधारणतया कविक अभिधानसँ, कविताक विधानसँ पद्य-रचनाहिक प्रतीति होइछ परंच काव्य-साहित्यक परिभाषामे रसात्मक वाक्य गुण-रीति-अलंकारयुक्त वाक्य मात्रकेँ काव्य कहल जाइछ, ओकर स्रष्टा कवि मानल जाइत छथि। एतेधरि कवित्वक कसौटी रूपमे गद्यहुकेँ विशेष रूपेँ महत्त्व देल गेल अछि– 'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' प्रसिद्ध अछि।

एहि दृष्टिएँ मुन्शीजी कोनो गद्य-ग्रन्थ नहि लिखलनि, 'गद्य-पद्यमयं चम्पूकाव्यम्' तकरो रचना नहि कयलनि, ओ कोनो नैबन्धिक सेहो नहि छलाह जे गद्यक अभिनिवेश रहितनि। परंच नाटकमे जे गद्य हुनक उपलब्ध होइछ ताहिसँ ई स्पष्ट होइछ जे हुनक गद्यो पद्यवत् अलंकृत ओ रसबोध-समन्वित होइत छल। एतय नाटकेसँ हुनक गद्य-लेखनक किछु प्रसंग उद्धृत कयल जाइछ....

"आजुक ई सभा तँ सौराठहुक सभासँ विशेष शोभमान देखना जाइछ। ओहि सभा मध्य घटक सबहुक चटक-चातुरी वाचलतासँ वरक आतुरतेँ तथा कन्यापक्षक लोलुपतेँ कथा-कथान्तरक गनगनाहटि, तदुत्तर कथा पटबापर टाका गनौअलिक झनझनाहटिक संग-संग सम्पत्तिशाली महोदयक घोड़ाक हनहनाहटिओ बोध नहि होइछ। एहि सभ मध्य सज्जन-समाजकेँ अभिनयावलोकनक तत्परतासँ तेहन निस्तब्धता भै रहल अछि जे सूची-निपातक सनसनाहटिओ कर्णगोचर भै सकैछ।"

एक अलंकृत-झंकृत यमक-अनुप्रासरंजित गद्य देखू....

"यैह तँ गढ़ लंक जतय निःशंक निजकुल-मयंक महाराज रावण विश्वविद्रावण बीसभुजधारी महा अहंकारी निवास कय रहल छथि। देखू आकाश-विचुम्बित विविध-मणि-खचित विचित्र रचना-रचित स्वर्णकलशोपेत शिखर ध्वज-पताकादिसँ सुसज्जित अट्टालिका–मालिका की शोभायमान भऽ रहल अछि। यद्यपि महावीर रणधीर समीर-तनयक लाङ्गूलाग्निसँ जरने एकर पूर्वक शोभा नष्टो भऽ गेल छलैक होएत, तथापि परम

प्रतापि पर-तापी सुरापि पापी प्रभुक प्रयत्नमे पुनः संस्कार पाबि सम्प्रति उत्तमे शोभा पाबि रहल अछि ।''

एकटा भोजक हास्यपूर्ण विवरण....

''हौ की कहिऔ, भात-दालिक झोकारा, घीवुक फुहारा, दहीक पोचारा, दूधक पनारा, गप्प-सप्पक सहारासँ पेट अफरल अछि ।''

पुनः –

''सुल्फा सन-सन भात, दिठिवरनाक दालि कण्ठ चाँछि देलक ।''

विभिन्न भाषाक रचना

उनैसम शताब्दी धरि भारतक शिक्षा-क्षेत्रमे मुस्लिम शासनक समयक छाप पड़िते रहलैक। फारसीभाषामे मेधावी छात्रकेँ शिक्षा दिऐब ओहि कालमे प्रचलिते छलैक। नगर ओ नगर-प्रभावित गामहु सभमे सजग नागरिक अपन मेधावी समाङकेँ मौलवीसँ फारसीक प्रचलित किताबी शिक्षा गुलिस्ताँ-बोस्ताँ ताहिना पढ़बैत रहथि जहिना ओ पण्डितसँ चणक्यनीति ओ हितोपदेश पंचतन्त्रक संस्कृत शिक्षा दिअबैत रहथि।

मुन्शीजी जखन कबराघाटमे अपन पिता पलटदासक मृत्युक बाद राज-दरभंगाक प्रसिद्ध बबुआन गोपीश्वरसिंहक आश्रयमे रहैत छलाह, खुरशेद अली नामक मौलवीसँ फारसी पढ़य लगलाह। आलिम-फाजिलक इम्तिहान तँ नहि देलनि किन्तु फारसीक ततबा ज्ञान प्राप्त कयलनि जे ओ फारसीमे कवितो लिखब आरंभ कयलनि। हुनक किछु स्फुट फारसीक रचना छिटपुट भेटैत अछि, एतय हुनक एक गोट रचना उल्लिखित कयल जाइछ :–

दस्ते-जिल्लत अब्रवर सरबसा फिल्वा के आगाजराव्।
रफ्तम वागवराए वरल खिल्लत वो अदा आदा साखनमा
करदम जुस्त कमाल लाहौलविला नाहक परेशाँ शुदम।
मिजगा अस्क अवर सवरन मरदद यारान दीदम शुमा॥

तहिना, जखन प्रेस-पत्रिकाक विकासक बाद हिन्दीक प्रचार प्रारम्भ भेलैक तँ ओहिमे गद्य खड़ीबोली हिन्दीमे ओ पद्य-कविता ब्रजभाषामे विशेषरूपेँ प्रचलित भेल। साहित्यिक अभिरुचि रखनिहार विभिन्न भाषाभाषीलोकनिक बीच ब्रजभाषाक कवित्व, दोहा-सबैया आदि तत्कालीन प्रचलित छन्दमे रचना ओहि युगक प्रमुख प्रवृत्ति छल। मुन्शीजी एहि दिशामे पाछाँ नहि रहलाह। हिनक अनेक रचना पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल। किछु नमूना एतय उद्धृत कयल जाइछ।

राज-दरभंगामे गुब्बारा रूपेँ व्योमयान उड़यबाक प्रदर्शन भेल छलैक। विभिन्न कवि एहि दृश्यक वर्णन कवितामे कयने छलाह, हिनको रचना ओहि प्रसंगमे प्रशंसित भेल छल :–

"नृपमिथिलेशयश जाहिर जगत जानि
कछु अनुमान हिय विद्या यों करै लागी ।
दिविलो गयो कि नाहि याही के जसु समाहि
दूती भेज जेको न्योंत चितमे करै लागी ।।
व्योमयान विरचि पठाई अंग्रेजनियाँ
कछु दूर जात धुनि श्रौनन पड़ै लागी ।
गावै यश किन्नरी सुरोहूँ महामोद भरौ
गमन अकाज जानि ह्वैति उतरै लागी ।।"

ब्रजभाषाक समस्यापूर्ति करबामे हुनक अभिरुचि विशेष छल, एक पुरस्कृत सवैया छन्द निम्नलिखित भेटैछ :–

वारन वारन वार भयो अरु वारवधू हित वारन लाकर,
वार किये असवारनमे विनु वार विचार हर्‌यो दुख आकर ।
वारहिवार कहौं कर जोरि सुनौ एक वार विनै व्रजनागर
वार बनै हमरौ अब वे प्रभु ! वार करौ जनु वार बराबर ।।

एहिमे 'वार' शब्दक यमक-अनुप्रास देखबायोग्य अछि ।

मुन्शीजी मिथिला-मैथिलीक अनन्य भक्त एवं मिथिला-मैथिली सदासँ संस्कृत भाषाक प्रति अनुरक्त-प्रसक्त । अतएव संस्कृतक प्रति हुनक भक्ति-आसक्ति स्वाभाविके छल । किन्तु संस्कृतक कोनो खास रचना हुनक नहि प्राप्त अछि । अथापि हुनक मिथिला-नाटकमे जे एकाध श्लोक भेटैछ ताहिसँ स्पष्ट होइछ जे संस्कृतहुमे हुनक गति-संगति छल । निम्नांकित पद्य मिथिला नाटकमे उल्लिखित भेटैछ :–

स्वभावगुणनम्रता विविधबुद्धिगम्भीरता
स्वधर्मपरिनिष्ठता सकलशास्त्रपारंगता ।
सुनीतिपथचारिता गुरुनिदेशसम्पालिता
सदाशुभचरित्रता जननि मोद संवर्धिता ।।

पुनः.....

आशावीजं हृदिक्षेत्रे यत्नेन परिरोपितम् ।
फलदं भवता सिक्तं मातुराशीर्वचोऽम्भसा ।।

एहि लघु पद्य-रचनासँ हुनक संस्कृतमे गतिविधि सुव्यक्त होइछ ।

हिनक भाषा विषयक ज्ञानक सम्बन्धमे म. म. डॉ. उमेशमिश्रक कथन अछि.... "फारसीमे नैपुण्य प्राप्त कएनहि उर्दुओ भाषापर मुन्शीजीकेर पूर्ण प्रभाव छलैन्हि ।

संस्कृतमय मिथिलाक वासी हएबाक कारणेँ संस्कृत भाषाक विद्वान् तँ छलाहे। एहि प्रकारेँ मुन्शीजी अनेक भाषाक विद्वान् छलाह।....तहिना व्रजभाषा तथा पश्चात् काल आधुनिक हिन्दी भाषाक विद्वान् छलाह, ओहिपर हुनकर पूर्ण अधिकार छलैन्हि।''

राष्ट्रिय आन्दोलन

मुन्शीजीक कवि-हृदय राष्ट्रिय आन्दोलनक समय देश-कालानुसार कोन प्रकारेँ उद्वेलित होइत रहल से हिनक काव्यमे देखल जा सकैत अछि। असहयोग आन्दोलनक मुख्य विन्दु विदेशी वस्त्रक वहिष्कार दिस जखन गाँधीजीक नेतृत्वमे चर्खा-कर्घापर जोर देल जाइत छल, मुन्शीजी अपन रचना द्वारा एहि आन्दोलनकेँ उत्तेजित करैत रहलाह :–

गान्धी सन त्यागी ओ विरागी अरविन्द ऐसी
विमल विज्ञानी जगदीश जग जानो है।
मोतीलाल बुद्धिके आगर ओ जवाहरजू
लोकप्रियताके यश जगमे कमानो है,
विद्या के विश्वबीच नामी है रवीन जैसे
दानी गुणखानि के ते जाको ना ठिकानो है,
लन्दनमे भाबे बऊ भारव अमान्य अबै
गुन ना हिरानो गुनगाहक हेरानो है।

समस्यापूर्तिक तर्जपर एहि कवित्तमे समसामयिक भारतीय नेतृत्त्व वर्गक उल्लेखपूर्वक राष्ट्रिय भावनाक अभिव्यक्तिमे कविक दृष्टिकोण सर्वथा समसामयिकता एवं राष्ट्रियतासँ ओत-प्रोत अछि।

चर्खा-कर्घा खादी देशी वस्त्रक परिष्कार ओ विदेशी वस्त्रक बहिष्कारक प्रसंग हुनक एक कवित्त :–

मैनचेस्टर ! मानो बात, घात ना लगाओ इसे
बीसवीं सदी का देखो ऐसे ही जमाना है।
रे रे लंकाशायर ! तू कायर, न मानै अब
स्वावलम्बन ही के लिए टीपू प्रण ठाना है॥
युरोप समस्त ते कहूँ मैं शुद्ध बानत नई
रोकि के जहाज इत आना नहि जाना है,
ने को परवाह ना निवाह अंग ढाकन को
भारत मे खूलि रहै खद्दर जमाना है॥

स्वाधीनता आन्दोलनक क्रममे हुनक उक्ति....

भारत स्वराज नैया मझधारमे पड़ी है
पछवा हवा की उस पर तूफान की झड़ी है ।
गुनवाह जो थे गाँधी बेढब उन्हें फँसाया
दमन का दृश्य देखै युरोपियन खड़ा है,
वो कूटनीति वाला गिरि है गहीर जल में
छन-छनमें चाल बदले मगरों को पेतरा है ।
सुनिये तो मालवी जी अब आप ही की वारी
बस कर्णधार होना एक आप पै अड़ा है ।
खद्दर का पाठ देकर पत्तवार धीर धरना
चूके न लक्ष्य केहू स्वाधीन व्रत पड़ा है ।

गाँधीजीक गिरफ्तारीक बाद मालवीयजीसँ नेतृत्वक अनुरोधमे आन्दोलनक उतार-चढ़ाव ओ नेतृत्व-परम्पराक प्रभाव एहिसँ व्यक्त होइछ । एहि सभसँ इहो अभिव्यक्त होइछ जे कविक हृदयमे स्वतन्त्रता-आन्दोलनक प्रति कोन प्रकारक सहानुभूति इंगित होइत रहैत छल ।

उपसंहरण

भारतवर्षक इतिहासमे उनैसम-बीसम शताब्दीक मध्यकाल–प्रथम स्वतन्त्रता-आन्दोलन १८५७ सँ स्वतन्त्रता-प्राप्ति १९४७ धरिक कालावधि केवल राजनीतिक दृष्टिएँ नहि, अपितु भाषा-साहित्यिक दृष्टिअहुसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि । भारतक प्रत्येक भूभागमे एहि बीच जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे किछु एहन विशिष्ट व्यक्ति होइत रहलाह जे अपन कृतित्वसँ समाजकेँ उद्‌बोधित-उत्प्रेरित करैत रहलाह । दयानन्द-राममोहनराय, रामतीर्थ-रामकृष्ण-विवेकानन्द, वंकिम-भारतेन्दु, रवीन्द्रनाथ तिलक-मालवीय, गोखले-गान्धी प्रभृति भारतरत्न एही कालावधिक रत्न छथि । मिथिलाक छोट-छीन परिधिहुमे भाषा-साहित्यक क्षेत्रहुमे चन्दाझाक बादे जे-सभ विभूति मैथिलीभाषा-साहित्यकेँ उत्प्रेरित कयलनि, लालदास-जीवनझा-हर्षनाथझा प्रभृति कवि-नाटककार, ओही विभूतिश्रेणीमे मुन्शी रघुनन्दनदासहुक नाम परिगणनीय अछि । प्रथम महाकाव्यकार रूपमे एवं उद्‌बोधक नाटककारक रूपमे मुन्शीजीक कृतित्व मिथिलाक वर्तमान साहित्यिक इतिहासकेँ उद्‌योतित करैछ । एतबे नहि, मैथिलीक नव आन्दोलनक प्रमुख सूत्रधार बाबू भोलालालदास सन व्यक्तित्वकेँ एहि दिस प्रेरित कयनिहार स्वयं मुन्शीजी छलाह । हिनक पट्‌टशिष्य बाबू भोलालालदास, आत्मज नरेन्द्रनाथदास एवं उत्प्रेरित पुलकितलालदास, धनुषधारीदास आदिक लेखन-प्रचारण एवं आन्दोलन-प्रसारणसँ वातावरणक एक समय एहन स्थिति भऽ गेलैक जे बाहरी लोक झा-मिश्रक उत्तर एकरा ''चन्दलाल दासक भाषा'' कहि संकुचित करवापर तुलि गेलाह । मुन्शीजी आजीवन मिथिला-मैथिलीक सेवामे तेना तल्लीन रहलाह जे ओ राज-सेवाश्रयी होइतहुँ, स्वयं साहित्यिक जनगणक सेव्य बनि गेलाह । साहित्यिककेँ काव्य-पथक निर्देशन देलनि, गायककेँ गीत देलनि, नाट्य मण्डलीक अभिनयकला अभिनिवेशीकेँ नाटक देलनि तथा मातृभाषा सेवीकेँ प्राणपूरक प्रेरणा देलनि । सुतरां मुन्शीजी एहि युगक विभूति रूपेँ मान्य छथि । रससिद्ध कविक व्यक्तित्व-कृतित्वक चर्चा-अर्चामे यैह सूक्ति अर्पित करव जे....

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः ।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ।।

परिशिष्ट

वंश-प्रसंग

(१)

नान्यदेव कर्णाट नृपति-कुल रवि सन मानी,
मिथिला देशक निशि-अराज नशि प्रगटल जानी ।
निजप्रभुत्वबल देश विदेहक शासक भेला,
राज्य-व्यवस्था सहित धर्मध्वज थिर कै देला ।।
दुखित दशा निज देशहिक देखि दया उर आनि कै,
अवतरला पुनु जनक जनु लोक रहै अनुमानि कै ।।

चित्रगुप्तवंशीय कर्ण कर्णाटक वासी,
मूल बलाइन ''लक्ष्मीकर'' बीजी सुखराशी ।
मम वंशज कायस्थ कमल कुल मन्त्री श्रीधर,
संग आनि नृप नान्यदेव मिथिला शासनकर ।।
श्रीधर श्रीधर मूर्तिकेँ अन्धराठाढ़ी ग्राममे,
स्थापित कै सुरपुर गेला उज्ज्वल कै निज नामकेँ ।।

वोधिदास परदार द्रव्य हिंसा परित्यागी,
गिरा गौरवित भाषु गंगहिक प्रति बड़ भागी ।
''गंगे याहि पवित्रताम्'' ई वचन सुनाओल,
पुरुषपरीक्षा मध्य ताहि विद्यापति गाओल ।।...

ओइनवार-कुल नृप-किरीट शिवसिंह प्रतापी,
जनिक ''अमियकर'' सचिव बोधिवंशज यश व्यापी ।

मिथिलाराजक अभयदान ओ पुनि लै आओल,
गाढ़ समय मन्त्रित्व धर्मपालक यश पाओल ।।
हुनक रचित कविता कलित कीरतिकेँ राखल अचल,
जनिक गुणावलि गानमे विद्यापति ई पद रचल ।।

नीतिनिपुण गुणनाह अंकमे अतिशय आगर,
कोष काव्य व्याकरण अधिक अधिकारक सागर ।...
कायस्थ माह सुर सिद्ध भउ चन्द्रतुला इव शशिधर,
कविकण्ठहार कल उच्चरइ अमिय बरस्सइ अमियकर ।।
(सुभद्राहरणक अन्तमे वंशपरिचयसँ)

(२)

''श्रीमल्लक्ष्मणसेन क्षितिपस्य रसैकविंशे ब्दे ।...
''श्रीधरदासेनेदं सदुक्ति कर्णामृतं चक्रे ।''•
''सश्रीलक्ष्मणसेन एकनृपतिर्मुक्तश्च जीवन्नभूत्...
''नाम्ना श्रीवटुदास इत्यनुपमप्रेमैकपात्रं सखा ।'...
''श्रीमान् श्रीधरदास इत्याधिगुणाधारः स तस्माद्भूत ।''...
(सदुक्तिकर्णामृतम्)

(३)

''बभूव मिथिलायां बोधिनामा कायस्थः । स तु कायस्थकुलमर्यादया राजनियोगं कुर्वाणोऽपि न प्राणिनं हिनस्ति, न परस्वमादत्ते, न परस्त्रियं कामयते, स्वामिदत्तेन जीव्यधनेन केवलं जीव्यति ।... प्रत्यापन्ने चान्तकाले तेन पद्यमिदं श्रुतं पौराणिकं यत्...

परहिंसा-परद्रव्य-परदारपराङ्मुखः ।
गंगाप्याह कदागत्य मामयं पावयिष्यति ।।...

पश्चाद् भागीरथीमुद्दिश्य गत्वा कूलादर्धक्रोशमात्र–देश स्थित्वा तत् पौराणिकवाक्यार्थ स्वकीयश्लोकार्धेन पूरयित्वा श्लोकं पपाट.....

परहिंसा-परद्रव्य-परदारपराङ्मुखः ।
सोऽहमभ्यागतो देवि गंगे याहि पवित्रताम् ।

तदनन्तरं गंगया जातपरितोषया कूलङ्कषकल्लोल-मालया... प्लावितांगः स कायस्थः आयुषि पूर्णे विधिनियोगात् परित्यक्ततनुः स्वर्गं नीतः ।।
(पुरुषपरीक्षा, तात्त्विक कथा)

(४)

वाचस्पति के जन्मस्थान के अतिसमीप कमलादित्य स्थान इतिहास-प्रसिद्ध है। वहाँ विष्णु, सूर्य एवं एक और खण्डित मूर्ति है। उसकी पादपीठ पर उट्टंकित एक श्लोक में विजेता के रूप में मिथिला के ऐतिहासिक राजा नान्यदेव का नाम उल्लेख है....

"श्रीमन्नान्यपतिर्जेता गुणरत्न महार्णवः।... मन्त्रिणा तस्य नान्यस्य क्षत्रवंशाब्जभानुना देवोऽयं कारितो येन श्रीधरः श्रीधरेण तु।".... वाचस्पतिने 'न्यायकणिका' में सेनवंश के संस्थापक आदिशूर की विजय का वर्णन वर्तमान क्रिया में किया है। "निजभुजवीर्यमास्थाय शूरानादिशूरो जयति" सेनवंश के अंतिम राजा लक्ष्मणसेन से नान्यदेव की जीत का वर्णन उनके मन्त्री श्रीधरदास ने उपरिलिखित श्लोक में किया है।...यहाँ लक्ष्मणसेन की उपराजधानी थी। लक्ष्मणसेन को पराजित कर नान्यदेव ने राज्यस्थापना की थी।

(वाचस्पतिसंग्रहालय रिपोर्टमे–
पं. सहदेव झा)

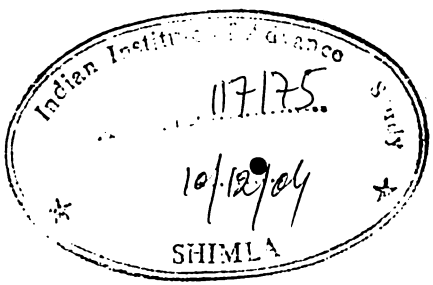

मुन्शीजी आजीवन मिथिला-मैथिलीक सेवामे तेना तल्लीन रहलाह जे ओ राजसेवाश्रयी होइतहुँ, स्वयं साहित्यिक जन-गणक सेव्य बनि गेलाह । साहित्यिककेँ काव्य-पथक निर्देशन देलनि, गायककेँ गीत देलनि, नाट्य-मण्डलीक अभिनयकला अभिनिवेशीकेँ नाटक देलनि तथा मातृभाषासेवीकेँ प्राणपूरक प्रेरणा देलनि । सुतरां मुन्शीजी एहि युगक विभूति रूपेँ मान्य छथि । आधुनिक मैथिलीक वरेण्य विद्वान् कुमार गंगानन्दसिंह हिनका प्रसंग कहि गेल छथि, ''मुन्शी रघुनन्दनदासजी *सुभद्राहरण*'क रचना कए मैथिली-साहित्यकेँ प्रथम महाकाव्य प्रदान कएलैहि अछि । मैथिलीमे गीति एवं नाटय-साहित्यक परम्परा तँ अतिप्राचीन कालसँ आबि रहल अछि, किन्तु अद्यावधि हिनकासँ पूर्व क्यो महाकाव्यक रचना नहि कयने छलाह ।''

एहि विनिबन्धक लेखक मैथिली-संस्कृतक ख्यातनामा साहित्यसेवी सुरेन्द्रझा 'सुमन' छथि, जनिक पचाससँ ऊपर मैथिली-संस्कृतमे ग्रन्थ प्रकाशित अछि । ई मौलिक-अनुवाद दूहूमे साहित्य अ
संस्थासँ सम्मानित, अवकाशप्राप्त मिथि
विभागाध्यक्ष एवं भूतपूर्व सांसद एवं विध

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 D 26 J
00117175

ISBN 81-260-0090-2

पन्द्रह टाका